# पार्वती पुत्र नित्यनाथ सिद्ध 



## शाबर मंत्रो का अन्द्रुत चमत्कार

## संय्रहित

## योगी अखिलेश

सकारात्मक विचार केंद्र

POSITIVE THOUGHT CENTER


नमः समस्वसिद्देंग्य:

गोररत्तमन्थमालायामपपश्चाशच्तमं पुष्पम
पार्वतीपुत्रनित्यनाथसिद्द्रमस्येन्द्रविरचितः

## 

## 

( पाठमांत्से सिदिदायक विधिसहित )
शाके २द७द
संबत् २०१३
प्रथमातृत्ति: 2000
(सर्वाधिकारसुरन्तितः )

## ग्रन्थागम:

गौरीपु च्रनित्यनाथसिद्धमस्येन्द्रोपदिछोडयं शानरचिन्तामशिर्मन्ध-

 चgुश्शतबर्षपाचीनपायडुलिपे: प्रतिलिपि: पाटेश्वरीपीठाच्छ्रीनाथसम्पदायसाहित्यसङ्य्रहशीलेनानुुन्द्घानेन जनेनानेन नब्लनार्थशिष्पमान्चिकमिषजो नियमनायस्य सौजन्याद्धिरिता। तसिमन्जेवादे (वि०० सं० २००४)

 गुहध्थ राजकीयपुस्तकालयभभ्वतिपुस्तकालयान च्यले ं च्यले परिशीलयता विनीतो बहुतियः समयः। येन नाय्य प्रारोेडकाइशः प्रातः। इदार्नी सममगोरच्नराट्र्रिहाहासमकाशयोजनायां पृृत्तेन राजघान्पा: प्तीच्चां कर्राबा-Яदेशस्येतिहांस्रकाशयक्षख्गा|क्काशीगोरन्तटिल्लायोगपचारिएीकार्याल्यमम्युपेतेन योगमचारियीसमोपाध्यद्द्वीरचन्द्रनाययोगिनोडइनोोषाचेनेवैव सह हिताय साघकजनानामहितहतये तमेतं श्राइरचित्तामयिय चिन्तामशिकलं गोरनघन्यमालायां सड्म्य्यं काएदेशे पाठकानां निच्चेतुं विहितोइयं म्ययनः। साषकजनचिन्ताम गिरयं शाबरमन्बचचिन्तामणिर्म्स्येन्द्रनायकयितः । मत्रेेन्द्रनाय, मस्स्थनाय, मीननाय, निल्यनाय, निल्यानन्दनाय, सिब्दनाय, सिद्यराज, सिद्देश्वर, मड्तलेशेशर, लोफेश्शर, लोकनाय, मझुभी, मझ्ञुनाथ, श्रादिनाय, लोके श, श्र्यलोकितेश्वर, लोकितेश्वर, श्रार्यलोकेश्वर, श्रायईवलोकितेश्वर, करुणामय, कुरा।कर, काईशिक, महाकाइरिक, पद्यपाएि, नीलोत्पलपाशि, पुएडरीककर, सरोजी, कमली, अ्रण्जी, अ्रमिताम, सहसबाहु, भाक्कर, मह।पकाश, पार्वतीपुत्र, गौरीपुत्र, शिवसुत, शिवमानसपुत, कामऊँेश्वर, तौलवेश्वर, योगिराज, गोरन्दगुरु, प्टमीति पसिद्दानि विविषकर्मंभिर्विविधनामानि विविध्यन्येषु विविघलोनेषु च विभोर्विलोक्यन्ते।

गोरन्नोड च्नतपन्वपषणफलतः कैनल्यकल्पं ठयधाद् योगाचार्यचतुप्र्यी विजयते योगप्र वारोज्ज्चला।।


द्राजस्थानाचितैस्तैरटिल यमि जनैर्गुम्फिता पन्थन्थपुष्षै: गुझ्जस्सिद्धालिमाला धुभगुएयुरभिः सद्रसा योगसूत्रा गोरत्न्रन्थमाला विलसतु सतंतं कठठदेशे जनानाम्॥।
 योगी नरहरिनाथ:पीर:श्रीचन्द्रनाथश्र ॥?॥

## शाइरमन्न्रोंका प्रभाब

"वेषे शरमाय पसि शरम सालुना ग्लौं शरमाय निरोग माडु
 उपयोगिता के लिये भकतर्य बुल़ीदासजीने भी रामापए में कंढ़ा हैकलि विलोकि जग हित हर गिरजा। सावर मंत्र जाल जिन्ह सिरजा।। ध्रनमिल श्याखर ₹रश न जापू। प्रगट प्रभाउ महेश प्रतापू।।

बुलसीदासजी न केवन्त शानर मन्च्रोमें विश्वास ही रखतेये श्रपिच इन मन्चों के चमनकारी पपोगों से पूर्यातया परिचित मी चे, प्तेददर्शन, हनुमझपासि श्रादि तुल्लमीदास की जीकनत्रन्नायें इस बात- को सिद
 लोक श्रौर परलोक के कल्पाया के जिये ही शाइर मम्धों को उपयोग में लाते हैं श्रौर सद्यः सिद्दि प्रात करके पर परार्य को भी श्रुतुुतम घनाने में सहगोग देत हैं
"शाचरचिन्तामगयः ——्रति प्राचीन पन्य हैं, ग्राजतक प्रकारा में श्राये हुए शांर मन्त्र शाल्रों में पह सर्वोंकृष्ट है। इसके सम्नल्व में श्रधिक कुब्ठ कहना भी श्रत्पल्न हो होगा, साषकाया ही स्घयं पम्नय सं।

## चन्द्रशेखरो जयति

भिखारीनाथधर्मज्ञ: कृपया समलंड्दृतः। मेघनाथंतु शिष्योऽमूघय्य सर्वंजने दया।। रूपनाथरतस्य वंश्यो महलां राशिरुज्चलः। हंसनाथथसतस्य शिष्यो महादेवसमो घ्यमूत् ॥ दिलीपनाथस्तच्छिघ्यंस्त्यक्यसंसारवन्धनः। नाथान्तेनावसानेन तर्ब्यात्यै (धर्म) रुर्गंसिद्बये ॥ तोनेदें निर्मितं कूपं शिवालयमलंज्कृतम । भन्रकारिशिवभी:यै काशिकायां मनोर मम.॥ विक्रमस्य गते वर्षे शुन्यषएनागचंद्रके ॥९६६०॥ शालिवाहशके रम्ये शरशयुग्माद्रिचन्द्रके ॥२७२२॥ ऊर्जे मासि सिते पक्षे चतुथ्यां चुधवासरे। घ्रतुराधाब्यनच्तन्रे शुभलग्नसमन्विते ॥

## शिवालयमिद्ं भिखारीनाथस्य

 नमः। शिवालयमिदं मेघ्नायस्य। ऐसा लिबा है ॥
खर्ती श्रीसंक्त्त ३८२ॅ ( १७२७) हरहरनाय की मढी म लागा रुपय्या २२६ वनाये कासींनाथर्जीने सुम -
( वि० सं० \{ऽ२ॅ में बर्तमान भाषाका रुप कैसा था ? यह काशी गोरच्तििल्ला गोरहद्चनाथके मर्दिरके श्रागे लिद्द (मीर) हरहरनायजीके जीव़त्समाधिम्दिरके इस उपर्युक्त शिलालेखसे दिप्दर्शान होता है। संबत् के श्रूक १५ या १७ के सन्देह में हैं )

> पीर चन्द्रनाथ सन्धैच

भीनायाय नमो नमः सिद्धेश्यो नमो गुऊस्पो नमः सकलदेवताम्प: गोरन्नत्रन्थमालायामस्पझ्चाशत्तमं पुष्पम् पार्वतीपुत्रनित्यनाथसिद्धमत्स्येन्द्रविरचित:

## 

※ँकारवाचकं साच्तान्महोगं श्रीनकेसरीम्। हिदि ध्यात्वा प्रवद्यामि चत्तत्सिध्यति मे वचः ॥१॥ प्रयोगरूपिएां वीरं महोगं श्रीनकेशरीम्। हृदि ध्यात्वा प्रवच्च्यामि यत्तास्सिध्यति मे वचः ॥र॥ वर्णात्मकं वर्षामयं महोगं श्रीनकेसरीम्। हृदि ध्यात्वा प्रवच्च्यामि यत्तास्सिध्यति मे वचः ॥३॥ ब्रहा विष्पुश्न रुद्रश्च ईश्वरश्र सदाशिाव:। बाग् विभूती रमा गौरी सन्तु मे कार्यसिद्धये ॥४॥ पार्वत्युवाच-भूसुरार्चित भूतेश शेषकद्नए शह्रर। लेक्षेशार्चितपादानज नमस्ते शाह्दरीपते ॥\&\| सपकोटिमहामन्न्रा उपमन्त्रा घ्रनेकशः। त्वत्फटान्त्वान्महांदेव श्रुता मे साम्प्रतं प्रभो ॥६॥ भूतले शाबरो मन्त्रों वर्तंते साधकं विना। पाठास्सिद्धिकरीं विद्यां पावर्नीं वद़ मे प्रभो ॥ष\|
ईश्वर उवाच-मम मानसपुन्रोस्ति मत्येन्द्राख्यो महाबलः। गौडकेरलकएांटा श्रान्धगुर्जरदेशकौौ $\|$ ॥ां शिष्यपश्चकसंयुक्तर्तपश्चके सुदारुएाम्। ततः प्रसन्नो भगवान् हंसरूपी परादपर: ॥ध॥ हंस उबाच-किमसित कांन्तितं ज्रूहि भ्यादिनाथ परात्पर ! घ्यसाध्यमपि योगीन्द्र ददान्येतदूक्रतं मस ॥९०॥

## शाबरचिन्तामएए:

## संन्तित्त भावार्थ-

पार्वतीने महारेवसे प्रश्न किया हे महेश्वर ! सात करोड़ महामन्न्र श्रौर श्रनेक उपमन्ज्र श्रापके कुपाकटानसे हमने सुना। श्र习 भूतलमें शाहरमन्त्र साघकके विना है। पाठमाः्रसे ही सिद्धिकरी. पावनी उस शाचरी विद्याका उपदेश कीजिये। इस पर ईश्वरने कहा-मेरा मानसपुत्र मत्स्येन्द्रनाथ नामका महाचली योगी है। उसने गौड केरल कर्णाट श्रान्ध्र श्रौर गुर्जर देशके राजा पू शिष्योंके साथ दार्या तq किया। हंस रूपो परात्पर भगवान् प्रस़न्न होकर होले —हे परात्पर श्रादिनाथ! मत्स्येन्द्र! वरं व्रूहि। हेयोगीन्द्र ! श्रसाध्य वस्तु भी देता हूँ यह मेरा घत है ॥९०॥ ${ }^{\circ}$ श्रादिनाथ उवाच-प्रत्येकं मन्त्रशास्ब्र्व कापालिकमतानुगम्। कामाचारविहीनन्तु कल्पयाम्यह्रमादरात् ॥??॥ कटाच्त्मसित चेद्देव वढाानागममादरात्। यं यं मन्न्रोक्तफलद़ं कुरु चिन्मयविग्रह् ॥१२॥ एवं तद्वचनं भुत्वा हंसरूपी सद़ाशिवः। भद्रं भवतु योगीन्द्र लभेद्वाब्क्तुतमादरात् ॥१३॥ इत्युक्त्वा तु महेशस्तु ददौौ ताद्टशतां यगौ। ध्रादिनाथस्तु गिरजे शिष्यानध्यापयन्मनुम् ॥१४॥ तस्य सस्यैव भाषायां मन्त्रांस्तज्जपत्ताम्। प्रयोगं चोपसंहारमुक्त्रवान् स च पार्वति ॥?थ॥ षट्कयोगात्कमेगौव देवता मन्न्रमाद़रात्। श्रादौौ तु द्वेवता वच्द्ये मत्स्येन्द्रोक्का: सुसिद्धिदाः ॥?६॥ रतिर्वाएी रमा ज्येष्टा दुर्गा चैव तु कालिका। घट्कर्मद्देवताः प्रोक्रा: कर्मादौौ ताः प्रपूजयेत् ॥?७॥ तस्य पूजां च कृत्वा तु पश्वात्तं मन्न्रमाद़रात्। चिन्तितक्च भवेद्देवि नात्र कार्या विचारएा ॥?द॥ श्रर्चयेद्देवतामादौौ जपेन्मन्नं कुलेश्वरि। जपेत्सिद्धिमवाल्नोति शाबरं चाद्युतं मनुम् ॥?ह॥ षट्कर्मनामकं वद्ये श्टाणु पर्वतनन्दुति।

प्रथमं शान्तिकं कर्म वश्यं चैव तढुच्रारम् ॥२०॥ तृतीयं स्तम्भनं कर्म विद्देषं च चतुर्थकम् । उच्चाटनक्घ गिरजे पब्चमं कर्म चाद़रात् ॥२?॥ षष्ठक्च मारएां कर्म मन्त्रशास्बेप्ष निश्रितम्। लच्करां तस्य वच्द्यामि तव पर्वंतनन्दृनि ॥र२॥ वातजं पित्तजं चैव श्लेष्मोद्भवमत: परम्। एवं विविधरोगादीन् कृत्रिमादीननेकश: ॥२३॥ श्रनुभूतप्रयोगब्च विश्वशान्तिरिहोच्यते। विधेयं जीवजातीनां वशीकर समुच्यते ॥२४॥ प्रवृत्तिरोधनं देवि रतम्भनं नढुदाह्त्तम । ध्रत्यन्तमैत्रीनाशः्व विद्वेषयासुदाह्त्रत् \|P叉\| अन्रान्त्या देशपिरत्यागो सवेढुचाटनं तथा। प्राएिनां प्राएहराएं मारांं शास्यसम्मतम् ॥२६॥ मारएक्च न कवर्तयं पायौः कएठगतैरपि ।
मारऐो निरयम्राम्निरिहैव कुलसुन्दरि ॥२ण इतिश्रीपार्वतीपुन्रादि नाथसिद्धविरचिते शाचरचिन्तामयांौ पळ्चद्राविडशाबरविधिर्नाम प्रथम: पटलः ॥१॥

तः श्रादनाथ मस्स्येन्द्र घोले—कामाचाररहित कापालिक मतका पत्येक मन्शशास्त्र तो हम प्रतिपादित करते हैं। हे देव! याद श्रापका कृपाकटान्न है तो श्रागमका उपदेश कीजिये। हेचिन्मयविमह! मनन्न देवता विषि फल्ल सः कहिये। एवं प्रकार मस्सेन्द्रनाथ के बचन सुन कर हंसरूपी सदाशिव बोले-हे योगी ! कल्याया हो, वाञ्क्तित फल प्रात होगा। ऐसा कहकर परम शिवने मस्सेन्द्रको मन्त्रोपदेश किया और श्रन्तर्षान हो गये। तदनन्त्तर श्रादिनाय मस्स्येन्द्रने जो जो शिष्य जिस जिस देशका था, उसीकी भाषामें उसको मन्बोपदेश किया श्रौर जपविषि, लन्तय, प्रयोग, उपसंहार, बट्कर्मयोगके कमसे देवत्वादि सच शिन्ना दीन्ता दी। ग्रादिमें मत्येेन्द्रोत सिद्धिदायक देवता कहंगे-रति, वाएी, रमा, ज्येष्ठा, दुर्गा, कालिका ये षट्कर्म देवता हैं, कर्मके श्रादिमें

इनकी पूजा करे। देवताकी पूजा करकें तदनुसार मन्त्रको जपे ग्रवश्य मनोवान्क्कित कार्यसिद्ध होती है, इसमें कोई सन्देह नहींी । हे कुतेश्वरि ! घ्रादिमें देवताकी पूजा करे, तच मन्र जपे, शांरमन्त्र श्रद्भुत है, जपसे ही सिद्धि प्राप्त हो जाती है। षट्कर्मों के नाम-शान्तिक, वश्य, स्त्भ्भन, विद्ध षा, उच्चाटन, मारा, ये ६ कर्म मन्त्रशास्त्रोंमें निश्चित हैं। वातज पित्तज श्लेष्मज इत्यादि विविध रोगादि श्रनेक छृत्रिम लच्तए हैं। ग्रनुभूत प्रयोग, विश्वकी शान्तिके लिए जो किया जाता है, उसको शान्तिक कहते हैं। समश्त जीव जातियोंको श्रपने वशमें करना वशीकरण है। समरत जीवोंकी प्रवृत्तियोंको रोक देना स्तग्मन है।
 त्यांग उच्चाटन होता है। प्राएियोंका पाएा हर्शय करना मन्ज्रशांन्रोंमें मारय कहा जाता है। किन्तु हे कुलसुन्दरि! पारा संकट में भी मारया तो नहीं करना चाहिये, क्योंकि मारएसे इसी लोकमें नरक मोगना पड़ता है।

## द्वितीयः पटलः

ॐँकाररूपममलं महोग्रं श्रीनकेसरीम्। हृदि ध्यात्वा प्रवद्ध्यांमि यत्तत्सिध्यति मे वचः ॥?॥ पार्वस्युणाच-शाबरं मन्त्रशाघ्ब्व विनायासतपःफलम्। वद मे द्वद्वेवेश करुएाकर शङ्कर ॥?॥ ईखखर उबाच-चन्दन्ं म्यानामिश्च कर्पूरं रोचनां तथा। चक्रिह्समृदं नीत्वा चक्रम्रमएवेलया ॥२॥ मृत्तिकाश्र कुलेशानि गृहीत्वा च समं समम्। तेनेंव पुत्तलीं कुर्याचतुर्जाछ्वृ्ममडलीम् ॥३॥ चतुरङु लमान्रन्नु यवमान्नन्तु निस्चितम्। ध्ञनुष्टमान्रं तदे हं सर्वावयवशोभितम् ॥४॥ भानुवारे समाराध्य ह्यर्चयेच रतिश्रियम्। त्रिकालमेककालं वा कार्यलाघवगौरवात् ॥र॥

घ्रनुरोध्य वेदनमन्न्रं जपेतकल्पोक्रमार्गत:।
तं मन्न्रक्च प्रवच्रगामि तव पर्वंतनन्दुनि ॥६॥
चन्दन, कस्तूरी, कपूर, रोचना, चक घुमते समयकी कुम्हारके हात की मिही, सबको बराइर लेकर चतुर्भुज श्रष्टमएइल पुत्तली बनावे। ४ ग्रद्नुल जव प्रमाए, श्रंगुष्ठमान्न सर्वाद्न सुन्द्र देहका प्रमाया है। रविवारको श्राराघना कर कामदेवकी पूजा करे। कार्यके लाघव गौरवसे त्रिकाल ग्रथवा एक समय वेद् मन्त्रके श्रनुरोघसे कल्पोक्त विधिसे जप करे। मन्न्र यह है -

ऊँ० जीं ऐं सौं ग्लौं हुँ ईं कँ कंद़्पशक्तिसकलकलाकलापनिपुऐ, इत्रुशरासनपझ्वबायान्विते, सकलरोगनिनाशने, खगान् मारय मारय। क्ल़ाँ रसाम्जायै, एहि एहि खवाहा \|७\|

रहस्यं मन्त्रुमनचे शान्तिकर्मसु योजयेत्। मनुं पष्टिवर्णामयं सद: सिद्धिकरं कलौ ॥दं॥ ध्रंशोककुसुमेनैव ह्यर्चयेद़िि देवताम्। पायसापूपगठ्यक्व मूल्लेनैव निवेदयेत् $\|ह\|$ एवं कमानुरूपेए लत्तमेकं जपेन्नरः। तदर्धमर्धं वा शुद्दो जपेत्सिद्दिमवान्नुयात् $\|? ०\|$ दर्मैंवा श्वेतदूर्वाभी राज्या वा सर्षपेएा वा। घ्रयुतः््व हुतं देवि कार्यसिद्विमवान्नुयात् ॥??॥ रोचनां मृगनाभिब्च कर्पूरक्च समं समम्। नद्याः ससुद्रगामिन्या उभयोसतटसक्भवाम् ॥?२॥ मृत्तिकां चैव सङ़ग्रह्य पलमेकं समाद्रात्। हच्तर्द्ष्रे चार्कवारे तु सङुम्रहेत्साधकोत्तम: ॥?₹॥ देवतोपरि संस्थाप्य भृगुवारावधेस्तथा। तद्वासरे कुलेशानि शारदाकतिपुत्तलीम् ॥?ध\| चतुर्भुजां द्विनयनां कमलासनसंस्थिताम लेखर्नी पुस्तक चैव वराभयकरं तथा ॥?५॥ पलाशमूल्रमाश्रित्य चम्पकैवा समन्तकैः।

श्रच्चयन्निशि काले तु मधु चैच निचेदयेत् ॥१६॥ वाशीमयं महामन्न्रं सिद्दशशावरमेव च। प्रजपेद्यगुरुर्गेया वश्यसिद्दिकरं परम् ॥२७॥
रहस्य मन्त्रको शान्ति कर्मो में लगाने। कल्लिकालमें तर्काल सिद्विन्दायक वह ६० अ्रत्तुरों का मन्न्र है । श्रशोक पुष्पसे देवताकी पूजा करे, पायस ग्रपूप श्रौर गढ्य (गौका दही, दूघ, घी, गोमून्र, गोमय, ) मूलमत्त्रसे नैवेन्य श्र्र्या करे। एवं कमसे एक लाख जप करे। श्रसक्त हो तो पू0000 या २4000 शुद्ध होकर जपे। सिद्धि होगी। कुश, श्वेत दूव, राई, सरसों, से 9.000 दश हजार श्राहुति हवन करे कार्य सिद्ध होगा। रोचना, कस्तूरी, कपूर, समभाग लेवे - तथा समुद्रपर्यन्त जानेवाली नदीके वार पार दोनों तट की १।? पल्ल मिद्ट श्रादरसे हत्त नच्तन रविशारमें लेने साघक इन वस्तुग्रोंका संग्रह करे। मृतुवारसे उस मिंट्टीको देवताके उपर रख कर उसो वारमें शारदा की पुतली बनावे चतुर्भुज द्विनेत्र कमलासन पर वैठी लेबनी पुस्तंक वर श्रमय घारए करती हुई उस शारदा की ढाकके जड़में ₹थापना कर रातको चम्पक या समन्तक पुष्पोंसे पूजा करते हुए मधुक्रा नैवेन्य चढाने। वाएीमत्र महामन्त्र सिद्धशाघरको गुरु मार्गसे जप करे। वश्यसिद्धि होती है। मन्त्र यह हे -

ऊँ एँ ॠों ध्रों हैँ हाँ ग्लौं हुँ च्तं सर्वजीववशकरी। त्रिज गन्मोहिनी त्रैलोंक्यं मे वशमानय। एहि एहि त्रह्मारिए वर्ंामये सकलशब्दमये सर्वं मे वशमानय रवाहा।

वशीकर एबाएंं तु शाबरं सिद्दनिर्मितम् ।
घ्रश्पश्वाशद्वर्णांस्तु पाठात्सिद्दिपदा नृएाम् ॥?८।।
खाने पाने पदातठयं लेपनोद्वलनादिभिः।
सन्त्रितं शंतनानन्तु वशीकर एमाप्नुयात् ॥र्\{॥ पार्वत्युवाच-शान्तिक'

पूर्वोक्तविधिना देवि पुत्तलीठच हरिद्रया।

कृत्वा तु पूजयेदेद्वीं भार्गंव्वं लोकमातरम् ॥२?॥

₹त्भन्भबच भवेद्देंचि मूलमन्च्रेएा साधकः ॥२२॥
तन्मन्न्रश्व प्रवद्वयामि तव यत्नेन सुत्रते । पाठमान्रेए देवेशि सत्रम्भनं देवतादिभिः ॥२३॥
※ हीँ छँ इँ हँ भीँ श्रीमहामन्म्मी सकलजन्डुवृत्तिरोधिनी अतन्भय ₹ एहि २ हुँ फट्।

चयस्तिंत्रशद्वर्णमयं स्तम्भनास्चं सुखावनम् । जपेद्वापि पीतबस्तु होमान्ततम्भनमाव्नुयात् ॥२४॥ इति ₹त्रम्भनम् .
सिद्धनाथ महन्येन्द्रोपदिए वशीकरणा शाअरमन्बमें पाठ मान्रसे सिद्धिदायक पूद श्रत्तर हैं। इस मन्नसे श०० वार श्रभिमन्च्चित कर कोई वत्बु बान पान लेपन परिघान बन्बनादि किसीमें देनेसे मी वशीकरए होता है । शानितक...वशीकरए....। पूवोंक्त विबिसे हल्द्दीकी पुत्तली चना कर लद्मीकी पूजा करे। पंले पुष्प पीलेत्रव (घी तेल हल्दी ग्रांद) होम करनेते औ्रौर मूल मन्भके जपसे स्तम्मन होता है। पाठ मान्चसे देवतादियोंका भी सतम्मन सिद्यि करनेवाला घह मन्च है ऊँ हीं ₹त्यादि उपयुँक ३३ श्रत्तरका सत्रम्मन मन्त्र जप़ कर पीत ( पेत ) वखु होम करनेसे खतम्मन सिद्धि होती है।।

श्मशानभरम चादाय भौमवारे तु बुद्धिमान्।
तैलं करू्ज्ं देवेशश गृहीव्वा तु समं समम् ॥२叉॥ पूर्ववृ्पुत्तरीं कृत्वा ह्यर्चयेन्निम्बमूलतः। निम्बपन्रैरर्कपन्नररेंचेन्नियत्रतः ॥२६॥ जपाद्वा होमतो देवि सद्यः सिद्धिकरं परम्। निम्नार्कपन्नहोमैर्वा काकोलूक (फंकोलक) दलेन वा ॥२ण\| राजिकालवएौर्वापि धत्तूरककरझ्जयोः। बीजहोमेन देवेशि सद्यो विद्वेषएां भवेत् ॥२८॥

## शाबरचिन्तामाश:

※ँ हीँ धर्मटिके २ कर्मटिके २ घोरे घोरतरे अ्यमुकामुक्रयोविर्द्दे षएां कुरु २ ख्वाहा । काकोलूकवद्न-गोठ्याघवद् मर्जारमृषकवद् विद्दूपएां कुरु २ ज्येष्टायै जगत्र्र्यविद्दे षकारिएिए एहि २ घं घं सीं हुँ फट् ख्वाहा ।

एवं ब्येष्टामयो मन्त्रः पाठास्सिद्धिकरः परः। घ्यत्यन्तमन्त्रतो देवि जपाद्विद्हेपां भवेत् ॥२ह॥ इति विद्देछयां पूर्एाम्
मद्नलवार में श्मशानभस्म, तेल, करश्र, सम भाग लेकर पूर्वक्त् पुतली बना कर नीमके मूलमें नीमके पन्न श्राकके पत्रों से पूजा करे जा होम करे तो शीघ सिद्धि होती है। नीम श्राकरे पत्रों के होमिसे या काक उन्ल के पंबोंसे या कंकोलके पत्तोंसे राई नमक श्रथवा घतूरा श्रौर करन्व के वीजके होमसे तल्काल विद्दे जए होता है। ॐ हॉं इत्यादि ज्येष्ठामन्च के पाठ से लिद्धि होती है, एवं जपसे विद्दे पए होता है।

कुलालहर्तविभ्रष्टां पूर्वत्सझ़्रहेन्म्द्यम् ।
श्मशानभर्म विमलं तदन्नक्व समं समम् ॥३०॥ खल्वेन चूर्सितं देवि कुर्याद्यु गामतन्न्रितः।
सर्वाझे एँ च सम्पूर्णां शिरीषकुसुमेन च ॥३?॥
ॐँ नमो भगवते जातवेदसे दुर्गायै जगज्जीवनकांरिएयै हुँ ग्लौँ ढूँ दुर्गायै उचाटय २ एहि २ हुँ फट् ₹वाहा।

एतन्ममन्न्रं जपेद्वांथ राजीलवएमिश्रितम्।
होमाद्वा कार्यसिद्यिश्च भवल्येव न संशयः ॥३२॥
इतित, उचाटनम्
पूर्वंबत कु हुारके हायसे निरि मिट्टी, निर्मेल श्मशानभद्म, श्मशानअ्रन्न सव सममाग तेकर बलमें चूर्यंकर सराब्वपूर्या दुर्गाकी पुत्त्ली बनाकर शिरीषुपुष्वसे पूवंवत् पूजा करे, श्रौर ※ँनमो...इल्यादि मन्त्रका जप करे राई नमक मिधित होम करे तो कार्यसिद्धि होती है। वह उन्चाटन विधि है।

श्मशानभरम तत्काष्षं तदन्नारं च पार्शति। तदन्नपिएडं तच्च्रूपं तन्रन्जुं च समं समम ॥३३॥ खल्वेन पेषयेत्सर्वं निन्धतैलैन मिश्रितम्। कार्लीं करालवदनां मधुपात्रसमन्विताम् ॥३४॥
 ली (नी) लापुष्पै: समम्गच्च्यं बलिं दद्यान्तु कुकुटमू॥३२॥ यमघटटकचेलायां रविवारे समर्चंयेत्। मन्न्रं जपेक्कुलेशानि मारएां निश्चितं मतमूं ॥३६॥ ॐ हँ३ घुं घुं सिं हुँ कालि कालि कालराश्नि श्रमुकं पशुं म्रह्न ( गृद ) २ हुँ फट् खाहा।
एतत्कालीमहामन्न्रं भौमवारे समारभेत्। निशायामयुतं जप्त्वा कार्यसिद्धिमवाप्तुयातु॥३७ ज्ञथवा जुहुयाह्देवि पाषाएां तैलमिश्रितम्। निलतैलेन संयुक्कं मासहोमेन पार्वंति ॥३न॥ शाल्मलीकुसुमैश्चैब विलतैलेन मिश्रितम्। मारएक्व भवेद्देवि नान्र कार्या विचारएा ॥३ह॥

## पावर्व्युवाच

इतिशीपार्वतीपुच्रनित्यनायसिद्धमीननायनेमिमितशाइरचिन्ताम खौद्दितयः पटलः
इमशानका महम. काष्ठ. ग्रंगार. ग्रन्नपिएड. सूप. रसी. इनको बराबर लेकर खल कर नीमके तेलसे मिला कर कराल वदनवाली मधुपात्र बड्ग पाश ग्रश्क्रुयोंते युक्त फालीकी पुत्तली बना कर शमशानमें ली (नी)ला पुण्पोसे पूजाकर कुक्कुटचल्ति देवे। रविवार यमघएकवेलामें पूबा करे श्रौर मन्ध्रा जप करे निश्चित मारएसिद्धि होती है। ऊँ हँ३ इस कालीमहामन्नका जप मौमवारमें ग्रारम्भ करे, राम्वीको दश हजार जप करने से कार्यसिद्धि होती है। ग्रथवा तिबका तेल मिलाकर पाषाएका एकमास हवन करे, या तिलके तेलस् सीमर्लके पुर्पोंको मिल्बा कर होम करें तो मारएसिद्धि होती है।

## तृतीयः पटलः

पार्वस्युवाच-यढुक्तश्वादिनाथेन पश्वद्राविडनिर्मितान् । मन्न्राविन्छुष्योपदिषांश्च वद़ मे करुााकर॥॥ ईंश्वर उवाच-पेश्वर्यमनघं देवि सर्वेषां चाव्छितं फलम्। सम्मोहनं साधकानां वद्दये सिद्दिवद्ं कलौ ॥२॥
ऊँ कीँ ऐ" सौँ ह्वीँ श्रीँ ग्लौं हुँ सकलजगन्मोहिनि मदन्नोन्मादिनि कीं एहि २ कीं कीं सम्मोहय २ बुद्दिं नाशय २। जीवमोहनी लागों मोह जिनु जिनु जावो मकरे तो मोहं च्राद्श़क्तिको अाया राजा मन्मथर्की घ्यान। फुरो घ्यागममन्त्रो मेरी अक्ति गुरुकी शक्ति। ईश्वर तेरी वाचा।

श्रयं सम्मोहनो मन्त्रों ह्यादिनाथेन पार्चति।
शिष्याय गौडद़ेश्याय सम्यगध्यापितशत्तथा ॥३॥
मन्त्रितब्चान्नपानादि सम्मोहनकरं पर्म्।
सत्रमानृक्चासन्निधानुपविश्य सत्तमातृकाः सम्पूज्यैकविंशतिदिनपयन्तं जपेन्मन्च्रसिद्दिर्भवति। ततः प्रयोगविधावेकविंशतिवारं खाद्यपानविलेपनोद्यूलनादि़त्तूनि संमन्ड्य दीग्रमाने सक्मोहनं भवर्वि $\| \leq 11$

पार्वतीने पूब्डा- हे करुएाकर ! श्रांदनायमत्स्येन्द्रने जो पश्चद्राविडों (राजा शिष्यों) को पश्चद्राविड भाषाके मंत्रोंका उपदेश किया था वह हमे करिये। महादेवने कहा•्त्रशु हे द़ेवि! श्रनघ ऐश्वर्य तथा सश साघकों को वाश्क्कित फल देनेवाला सिद्दिदायक संमोहन मन्त्र यह हैऊँ क्ली ऐं इत्यादि। यह सभ्मोहनमन्त्र . श्रादिनाथमतँयेेन्द्रने शिष्य गौडदेशके राजाको दिया था, इस मन्न्रसे श्रभिमन्च्रित श्रन्नपानादि परं संमोहन कारी होता हैं। ससमातृकाश्रोंके समीप बैठ कर उनकी पूजा कर २१ दिन तक जपनेसे सिद्धि होती है। खाह्य पान चन्दन सिन्दूरादिविलेपन उद्धूलन परिधानादि वस्तु ₹? वार श्रभिमन्चित कर देनेसे सम्मोहन होता है ।

## मत्सेन्द्रनाथविरचितः

अ्रथ वद्द्ये कुलेशानि भाषाकेर्लगुत्तमम्।
सद्यः सिद्धिकरं मन्न्ं नित्यनाथोदितंत पुरा ॥ध॥
केरलमन्त्रो यथा-ऊँ कीं सकलजगन्मोहिनि हीं मलयालभगवति सकलसम्भूतसम्मोहिनि कीं कोडूमाएँ धुद्धि कडुतु पूमांकि कोडवा मलयाल भगर्वति कोडुवा ईंश्वराया। उमक् उसायो उमच्छु मुपतु मक्कोटि देवा क्वलाऐये कोड़बा मलयालं भगवति र्कीं गुरुभसादं।

केरल्लावारसन्नाम्ने शिष्याय कुलसुन्दृरि। उक्तनान् नित्यनाथोऽसौ सर्वसिस्द्विपदं कलौौ ॥झ॥ पूर्ववन्मातृकां चैतामर्चंयेक्फुल्युन्दरि । घर्चंयेन्मातृकां चैव सघः सिद्धिकरीं पराम् ॥७॥ खाद्यपानीयवस्तूनि विविधानि कुलेश्वरि । मन्त्रितं भन्तितं पुंसां बशीकरएामुत्तमम् ॥द॥ तरुबीजबच जातीनां मन्न्रेखानेन पार्वति। संम्मोहनं भवेल्सल्यं किं पुनर्मानवैः सह ॥धा -
घ्यनेन मन्नेजेयैकविशशतिवारमुत्तराभिमुखं भस्मचन्दनतान्ततादीन्यभिभन्न्य धार्यमायो स्रीपुरुषराजानो वश्या भवन्ति।

श्र习 वार्वंतीपुत्र गि.त्यनाय मत्येग्द्रकचित तन्काल सिद्विदायक केरेलभाषाका शाझरमन्न्र कहेंगे むँ क्लीँ-₹त्यादि केरहलाबार नामके शिए्यको नित्यनायने सर्वस्सिद्धिकारक मन्श्रोवदेश दिया है। पूर्ववत् सर्वस्सिद्धिकारी मातृक्षाकी पूजा कर खान पानकी श्रनेक पकारकी वखु ग्रभिमन्त्रित कर खानेसे उत्तम सम्मोदने होता है। वृद्दलता ग्रन्नादि बीज अ्थावरमी मोहित हो जाते हैं मानव जातिकी चातही क्या ?॥ इस मन्धसे २१ वार उत्तरमुख होकर महम चन्दन श्र्वत्तादि ग्र्िमन्चित कर घाराए करनेसे स्री पुरष राजा इत्यादि वश्य होते हैं।
( ईइ्वर उवाच ) -्रथ वच्द्ये कुलेशानि नित्यनाथेन सादरात्। कर्शाटयोगिराजं हु मन्चितं बस्सुपावनम्॥ १०॥
※ँ नमो भगवते ( ति) मदनमोहमये पश्वमूतमोहिनि चतुर्विध जीव गलनु मोहिसु रा। तन्नो नो उंढ़ेकंए तुरित ठयतलिंन्नकाया कालुकैं। प्गाडदे कल बहु दिवोडि वरलि वार दिर्देरे महामायाये काल भैरबराये ब्रह्य चिष्यु महेश्वरये श्रीराम ईतनाऐ कीं मोहिति मोहिसु २। निंनेगे निन्नाये मोहिसु ॐ गुरुपसादं।

श्रयं करााटको मन्त्रो योगिनामाप ढुर्लंभः। त्रि:सप्तमन्त्रितं भष्म मोहनं द़ेवरत्तसाम् ॥ १? ॥ प्रातरुत्थाय देवेशि मन्न्रितं जल्लपानतः। तद्वषः (शः=द्रव) श्रवसाद़ेव मोहनं भवति धुग्वम्॥?२॥ घ्रनेन मन्त्रेएँकविंशतिवारं विमूतिमुद्कमभिमन्ड्य पाने क्रिंयमाऐऐे सकलजनमोहनं भवति। खर्जूरमुद्कमध्ये नित्विष्य तदुदुकमेकविंशतिवारमभिमन्ड्रापेन्त्तित्ग पुरुषस्यं दृत्ते, ज्यामरएान्तमोहनं भवति ।

नित्यनाय लोकेश्वर मत्स्येन्द्रने कएाटकके राजा ग्रपने शिष्म योगिराजको उपदिष्ट पावन शाबर मन्त्र-ऍँ नमो-इत्यादि यह कएाटिक मन्त्र योगियोंको भी दुर्लंभ है। २१ वार श्रभिमन्त्रित भर्म , देवता रात्तस श्रादियोंका मी मोहन करता है, मनुष्यों की तो वात ही क्या ? प्रातः उठकर पूर्बोंक्त पकार मन्चित जलपानसे उसका शब्द सुनने मान्रसे निश्चित मोहन होता है। इस मन्त्रसे २? वार विभूति जल ग्रादि श्रभिमन्जित कर पान करनेसे सकल जनका मोहन होता है। खजूरको जलमें डाल कर उस जलको २१ वार श्रमिमन्त्रित कर श्रमीष्ट मनुष्यको देनेसे मरएा पर्यन्त मोहन होता है।

च्यतः परं महेशानिन भाषगुर्जरमन्न्रकम् ।
व₹्दये संमोहनार्थंक्व नित्यनाथेन निर्मितम् ॥?३॥
ॐ कीं सकलजगन्मोहिनि पक्व्वभूतपश्चितसपश्वतन्त्वे चतु. विधजीवान् मोहय घ्रायो पगुतले चमेनु वाधो मोहि वश्य

करो न करे तो हन्तुमत की घाए, कालभैरवकी घ्राए, तेरी शक्ति मेरी भक्ति फ़ररो मन्त्रका (ल) रूद्र।

मातृकामचयेदादौौौ पजपेन्मन्त्रनायक्यम्।
मोहनंब्व भवेत्सिद्धं शिवस्य बचनं यथा॥१४॥ लौकिकाग्नौ तुं तेजर्वी मन्जेेाएानेत साधकः। मध्चाक्षं मल्लिकापुष्पं जुहुयान्नामसंयुतम् ॥ १थ॥ घ्रशेत्तरशतेनैव कुन्कुटासनपूर्वकम्। अत्यन्तशान्रवः शीघं मोहिताः भ भवन्ति हि ॥ १६॥ घ्रारनालं मथित्वा तु अन्नभाएडे विनिन्तिपेत्। बदृन्नभच्तकः सर्वः सघः संम्मोहितो भवेत् ॥१७॥ घ्धारनालं शतवारं मन्ध्रयित्वाडन्ने निच्त्वप्य सत्त दिनानि भच्क्यो मोहिता भवन्ति।

यहँसे महाप्राश नित्यनायमस्स्येन्द्रनिमिंत गुर्जर्राषाका सम्मोहन शानरमः्च-ऊँं क्ली-इल्यादि। प्रयम मातृकाश्रोंकी पूजा कर मम्नोंके नायक सिद्धशांरका जप करे संमोहनसीदिध उसी भकार होती है, जैसे शिबका वचन। इस मन्धसे तेजख्वी साधक लौकिक ग्रनिमेमें साधकका नाम लेकर मधुमिश्रित मल्लिकापुष्वका हवन करे। इस प्रक्रार कुन्कुटा• सनसे श्रठोत्तरसौके नियमसे हबन करनेसे श्रत्यन्त शत्रुमी शीध मोहित हो जाते हैं। काब्जीको मंधसे मथकर ग्रन्नमाएडमें ब्ठिड़क देनेसे उस श्रन्नको जो जो खाता है, वह वह तक्काल मोटित हो जाता है। सौवार काझ्ञi को ग्रभमिमन्न्रित कर ग्रन्नमें त्वेपए कर उसको ७ दिन मान्र लानेसे ही मोहित हो जाते है।

घ्यान्द्रशाबरमन्न्रः्च महाश्यर्यंकरं परम्।
वद्द्येऽहं तव देवेशि नित्यनाथोदितं पुरा॥ १₹॥
ऊँ नमो भगवत्वत सकलजगन्मोहिनि पश्चितपश्घ习ाएपश्घतर्चे कीं एहि २ क़ीं चतुर्विधजीवुलुन्मोहि चकुंटिकानि कुनीमानतीक्रु वीरभद्रनाननीक्रुमुष्यै। मुकाटि देव तुला न त्रिम्त्तु ल़़ान श्रादिशक्तिं इंननाक्रु मोहि पंचाय कुंटे कीं संमोहिनीक्कीं गुरु प्रसादं ।

श्रान्ध्रशाबरमन्त्रक्व घ्रत्याश्र्यंकरं परम्। र्मरान्मोहनं सर्वजनैैैैरसमन्वितैः ॥ १६ ॥ एवन्मन्न्रेया देवेशि समुक्तं करवीरकम्। होमयेप्पूर्वमन्न्रेया मन्चितं (न्तान्ते ) साधकोत्तम: ॥२०॥ त्रिदिनाद्राजपुत्रो वा राजा वा शत्रवस्तथा। कांच्नितं कन्यका वाथ सम्मोहनकरं परम् ॥.२१॥
घनेन मन्त्रेश साधकतामपूर्वंकं शतनारं रक्तक्वीरकुसुमानि लौकिकाग्नौ वैदिकाग्नौ वा जुहुयात् वश्या भूता सा कांच्चितं ददाति।

इवि सन्मोहिनी विद्या पश्खद्राविडमुच्यते।
योगैरैरेकतपसा साध्यं सन्मनुना अवेत् ॥२२॥
इति श्रीपार्वतीपु习र्भीननत्यनाथसिद्धमत्स्येन्द्रविरर्विते शाबरचिन्तामयौं वृतीयः पटलः ॥

पुरा कालमें पार्वतीपुत्र निच्यनाथमलयेन्द्रोपदिष्ट- ँँ नमों मगवतिइत्यादि ग्रान्ध्र शांरमन्र्ध बड़ा ग्राख्यंर्य कारक समराया मान्तसे वैं।योंकामी मोहन करता हैं। इस मन्धसे समुक्त करवीरको पूर्वंवत् ह्ववन करे। तीन ही दिनमें राजा राजपुत्र कन्या प्रभृति वाग्ब्छित साध्यका सम्मोहन करता है। इस मन्धसे साधक नाम पूर्वक सौवार रक्त करवीर पुष्पोंको लौकिक या बैदिक श्रिनिमें हवन करे। वशीभूत होकर वह मोहिनी विद्या मनोवातिक्छत फल देती ई । पह मोहनी विद्यापश्ध द्राविड कहलाती है। ग्रनेक योग तपष्या तथा सद्मन्न्र द्वारा साध्य होता है ॥

## चतुर्थः पटल:

महामायामयं वीरं....... । .वचः ॥ पार्वन्युवाच-नमस्ते निरिजानाथ नम: पन्नुगभूषया ।
वंशीकरांयोगश्व वद मे करुएाकर ॥ १।
ईशवर उव़ाच-वशीकरायोगबच बन्देडहं तव सुव्रते। घत्यन्तसुगमं देवि सर्वसिद्धि刀दृं नृएाम् ॥R॥

गौडं मन्न्र पंवद्चयामि श्यामलौख्यं सुपावनम्। यह्य ₹मर एमान्रेल न्नैलोक्यं बशमान्तुयात् ॥३॥
 छसककृन्मदिरामोदवदनेने ध्रनौपम्यचरिते ऐं कीं हीं गुलामातनिं जनमनोरब्जनकारि मनभेदि भगवति गुवुंक्तिकामगति फुरो ईश्वर मन्न्रते वीरवाचा।.

एतन्मन्च्रवरं दे़वि प्रेपेक्कालिकालये .। अ्रथना मातृकास्थाने चरिड कापुरतेंडषि वा ॥धा।
 च्रिकालं तु कुलेशानि जपेच्च्छतमतन्द्र्ति: ॥叉॥ धर्चयेत्ररवीरेएा चडिडकामूलमन्च्रतः।
 एतन्मन्ज्राया गिरिजे चन्दृनं भस्मकं तथा। मन्न्रितं धारयेदेनि जैलोक्यं वशमानयेत् \|७\| निस्यमडोत्तरशतं जप्त्वा भन्त्रं सुपावनम । यन्न कुन्न गतो वापि कार्यससिद्दिमवाप्नुयात् ॥द॥ घ्घनेनैकविशतिवारं विभूतिचन्दनाच्ततादिकमभिमन्डय धारयेस्सर्वे वश्या भवन्ति।

वशीकरएा योग मनुष्यों को सर्वसिद्दिभदायक श्रत्यन्त सुगमश्यामल० नामक पावन गीडशाषर मन्र है। ऊँ ऐें क्की इन्यादि।-जिसके समरय मान्र से तीनों लोकशश में हो जाते हैं। इस मन्न का जप कालिका मातृका या चरिडका के मन्दिर में कृष्पाष्टमी से श्र्रारम्म कर कृष्य चवुर्दरी पर्यन्त त्रिकाल श्रत संख्या सावधान होकर जप करे। चरिडका मूलमन्न से करवीर पुष्पोसे पूर्जा करे। निमहानुपद्धायक मन्बत्दिद्धि हाती है। इस मन्न्र से मन्क्रित चन्दन भहमं श्रादि बारए कर जैलोक्य को वश करे। निल्य श्रघ्टोत्तरशत जपकर जाँं कहीं भी जाये कार्यसिद्धि श्रवश्य होती है। इससे २? वार विभूति चन्दन श्रन्तत सिन्दूरादि ग्राममन्चित कर धारए करे सब वश्य होते हैं।

केरलन्बु महाँमन्न्रं शाबरं सर्वंकामदूम्। वत्र्ये $S$ हैं तव देवेशि सर्वलोकोपकारकम् ॥ह॥ ॐ० क्कां मलयालमातन्धि मर्नासजकोटिलावएये मध्वामोदवदने ऐं कीं मातज्ञेश्वरि वरमा कोड़ु वाउ (ड) मुकुनीर वीरभद्रायों। विरूपान्तना यों । ध्धादिभैरव ॠ्ञाज्ञा। ऊँ गुरुपसादं। एतत्ते केरलं मन्न्रं यन्तविय्याधरैरपि। अलम्यं ंगरिजे द़ेवि प्रपपेवचर्चएडकालये ॥२०॥ श्रुक्क्वन्ते समारम्य पञ्खम्यां भौमवासरे। न्विशतं प्रपेन्नित्यं दशमेऽन्हि समापयेत् ॥?१॥ मन्न्रसिद्दिमवाप्तोति नान्र कार्य विचारए। एवन्मन्ने़ेए fिरिजे चन्दनं तु त्रिसम्रधा ॥१२॥ मन्चितं धाराएं कुर्याद्द द्वेधा पक्वाझलेपनात् । हण्वा स्पष्दा नरो नारĩ त्रिदिनाद्दशमानयेत्त ॥?३॥
सघ लोगों का उपकार करने वाला, समसत कामनाश्रों को देनेवाला केरल शानरमहामम्ध यह ह——ँ कर्ली मलयाल-इत्यादि। यह केरेलशाइरमहामन्च यूत्त विद्याघरादियों को मी श्रल्म्प है। इसका जप चरिएका के मन्दिर में शुक्रफप्त पश्चमी मझ्न्नलवार से पारम्भ कर नित्य तीन सौ जप कर दशम दिन में समात्र करे मन्चसिद्धि ग्रवश्य मिलती है। इसमें कोई सन्देइ नहीं। इस मन्ञ से चन्दन को २१ वार मन्चित कर धारया करे दो प्रकार से पश्बाबन लेपन करके देबने से सर्श करने से नर नारी को तीन दिन में वश कर लेता है।

कर्गाटमनन्ज्रं वद्ध्यामि कलौ सिद्धिपदं नृएाम्। घादिनाथेन कथितमत्यन्तं सुखदं प्रिये ॥श४॥ ॐँ की श्रामले विगले शरदिन्दु ोटिपमुखे मतझ्भृृषिजे मड्शलाड़ि नन सिल्भम पुनिने याद। महादेेवी चदुर्विध जीवकुल वश माडू माद्दिदे मल्भिकार्जुननाएों, महाशत्त्यायों। मलयालं भगवत्याएँं। ※ँ गुरुमसादं।

एतत्करांटकं मन्न्रं सद्यः सिद्विकरं परम्।
डुर्गालये जपेन्मन्न्ं निन्यमष्टोत्तरं शबम् ॥१叉॥

## मस्सेन्द्रनाथविरचितः

शुक्तभतिपदारम्य नवम्यां तं समापयेत्। मन्न्शसिद्धिमवापनोति नात्र कार्या विचारएा ॥३६॥ मन्ज्रेणानेन देवेशः मन्च्चितं तोयपानतः।
क. नरनारीपन्तिमृगा ये च जीवसमुद्धवाः ॥३७
भवेद्धश्यमनौं वश्या राजानो वापि पार्वंति।
शर्करा मन्च्चिता देया स्री वश्या नान्र संशयः ॥३द॥
श्रादिनाथ मत्येयेन्द्रकयित सिद्धिदायक कर्गाटक शाबर मः्र ग्रत्यन्त सुखदायक हे— ऊँ क्लीं ₹्यामले—इल्यादि मन्न्र को दुरांमन्दिर में नित्य १०० वार जप करे तर्काल सिद्धि होती है। शुल्क प्रतिपदा में प्रार्म्म, $\varepsilon$ मी में समाति करे। मन्र्नसिद्धि प्रवश्य होती है। इसमें संशय नहीं। इसके सिद्ध होने पर मन्च से मन्तित जल्लपान करनेसे नर नारी पशु पच्ती मृग समःत जीव जन्दु राजा श्रादि वश्य होते हैं। शाकर को मन्न्चित कर देने से ब्री वश्य होती है। इस में संशय नहीं है ।

श्यत्यन्बसुगमं मन्न्ं पाठास्सिद्दिभद्वं नृए।। ।
शाबरं गुर्जरं मन्न्ं शश्वज्जपफलप्रद् म् ॥धह॥
※ँ नमो भगवति उप्रहूपिएँ उन्जयीनीमहाकालि उरुतन (र) वशीकर्रदे हीं जीवराशिकुं घाएो मेरे पगतरे करो मेरे वश्य २ न करो तो श्रादि भैरव के श्र्यांएा रामचन्द्र की घ्घांएा ※ँ गुरुभसादं।

एतनुर्जर रमन्न्व प्रजपेद्वेशुकालेये।
छ्रयुतात्सिद्धिमाल्नोति शिवस्य वचनं यथा ॥२०\|
हरिद्राकज्जलं चैव मन्त्रितं धाराएात् प्रिये।
पतिवश्यकरं हीयां विना रूपेए पार्वति ॥२श॥ ताम्मूलस्रत्विभूषादि वननिनेन पार्वंति।
स्रीवश्यं निश्वितं लोके शिवस्य वचचं यथा ॥२२॥
घ्यान्ध्रं मन्न्रं प्रवद्यामि सद्यः सिद्धिकरं तथा।
नित्यनाथेन सिद्धेन यढुक्त्ं तत्तथथव हि॥ २३॥
ॐँ नमोडसु मातस्भि राजराजपुखपूंजिते रत्यचिति। ※ँ हीं

जगत्र्यंन्यापकुं राजपिनक्रुं सद्वितारालयिन। ऊँ श्यामल रक्त श्यामल सकल जुंचुलानक्रुं वश्यं चेंप चायकुंटि वामीक्णुनियाननी यादिशक्तियन कालमैरवु नान कालरुद्र नानावश्य चेयि। ※ँ. गुरुप्रसादम् ।

एतदान्ध्रमयं देवि भाषाधार एामेव च। मन्नराजं कुलेशेानि सर्वोसद्धिकरं नृएाम् ॥ २४॥ हसते च भानुतारे च प्रारभेन्मन्न्रमाद्रात्। समें च पजपेद्रान्तौ शतमष्टेत्तर प्रिये ॥२叉॥ एवं चार्कदिनान्ते तु च्राह्मएः प्रजपेत्रिये। मन्त्रसिद्यिमवाल्नोति नाँ्र कार्या विचारएा ॥२६ ॥ किश्विद्रक्कं समादाय मन्त्रयेत्पार्वंति खवयम्। तद्रक्तं निन्तिपेत्कूपे ग्रामः सर्वो वशीभवेत् ॥ २७ ॥. इतिशीपार्वतीपुच्नर्नीसिद्धनाथविररचतेशाबर्गचन्तामयौंचतुर्थ:पटल्त: लोकेशेखर नित्यनायसिद्द मत्येग्द्रोक्र तरकाल सिद्धिदायक श्रान्ध्र शांकर
 रविबार हस्तनत्त्रमें पारम्भ करे १०द की सात माला राधिमें जपे। एवं दूसरे रविवार तक जपनेते मन्न्रसिद्धि ग्रवश्य होती है। ख्यं थोडा रक्त लेकर मन्चित्रि कर कूवेमें डालेतो सारा घाम वशीभूत होता है।

## ). पश्च्वमः पट्लः

 पार्वस्युवाच कैलासशिखरावास कालकएठ कपालभृत्। श्चधुना शाबरं मन्त्रमादिनाथोदितं वद ॥ ? ॥
 ※ँ नमो भगवति श्मशानवासिनि सक्कभूतभयझ्षरि सर्वोज्चाटनकारिएा कालरद्नने कोधने वश(क)रि उल महाशक्ति नातो तिदुवर उच्चाटन माडु माडु दिद्धने निनगे कालरुद्रनायों कश्विका

मन्तियायो कावेरी जन्बुकेश्वर ना⿺辶ं। ※ गुरुशक्ति हीं गुरु. प्रसादम् ।

शाबरोजाटनं मन्न्ं कर्ााटाल्यं सुपावनम्।. नग्नेन प्रजपेन्मन्न्रं सिद्धिभाँंगे च साधकः ॥३ ॥ षट्महस्र जपेन्नित्यं कुकुटासनयोगतः। दन्चिएाभिमुखो भूत्वा मन्न्रसिद्धिमवान्तुयात् ॥ ४ ॥ तदारभ्य नु देवेशि मध्येन मनुसाधकः। अस्तं कृत्वा महेशानि प्रजपेन्निशि चैच हि ॥५॥ वाएासंख्यासहस्तात्तु कार्यंसिद्धिमवाधुतात्त्। काकोलूकदलं चैब जुहुयास्साधको निशि॥ ६॥ प्रेताग्निनाथवा देवताजिकत्तानलेन वा। वन्हिना जुहुयान्मन्ज्री ह्यु चाटनकरं परम्॥ ७॥ प्रेतभर्म समादाय मन्ज्रेखानेन साधकः। शतनारं मन्त्रितं तु भौमवारे तु बुद्दिमान् ॥ ६॥ शतं मूर्धि नित्विद् भौसे यमघएटकवेलया। सत्यमुःाटनं सघः शिवस्य वचनं यथा ॥ ह॥
पार्वतीने कहा हे कैखासवासी नील्लकरठ! श्रादिनाथ मत्स्येन्द्र उपदिष्ट शाबर मन्र्र कहिये। महेश्वर्ने कहा हे पुदते! मीननायप्रयीत श्रुनुप श्रगोचर श्रन्भुतसे भी श्रन्भुत- ऊँ नमो भगवति-इत्यादि कर्शाट शाबर उच्चाटन मन्र कुक्कुरामनसे दन्विए मुब होकर श्रौर मौमवार से निल्य नग्न होकर ६ हन्जार जप करे, मन्र्र सिद्धि छोती है। मन्न्रसाधक उससे ग्रारम्भ कर मंध्यम प्रस्त कर रातनो जप, वाए संख्या ( $4000=$ मश्ग संख्या ) हजजारसे कायं सिद्धि होती है। इमशानान्नि देवतान्नि रसानिन बनतृएाल्निमें रातको काक उल्लूके पंब हवन करे, उच्चाटन श्रवश्य होगा। बुद्दिमान साधक इस मन्ध्ये मंग्लको मुदेंका भष्म लेकर १०० वार श्रमिमन्चित कर फिर मंगल़को यमघएट वेलामें सौ वार सिरमें डाले, श्रवश्य उन्चाटन होता है, जैसे शिकका वचन।

वच्ये महामहोमन्न्रं भाषाद्राविडमेव च।

## शाबरचिन्तामएः:

स्मराास्तिद्धिमाव्नोति नित्यनाथेन निर्मितम् ॥ २०॥ ऊँ कालि २ मह़ाकालि २ ग्लौं, कालराश्रि कान्हेश्वरि एहि २ अ्रसुक्कुच्चाटय २ देश लूलुं तोर दादि इरंदाल देवि आायों। पृतोलुंतोरतादिरंदालू उमा महेश्वररायथँ । विध्घु तोर तामलु इरंदाल वीरभद्र। अँ कालि २ महाकालि कालरान्रि । लँ गुरु्रसादृम्।

एतत्ते केरलं मन्न्रं सर्वंमन्त्रोत्तमोत्तमम ।
रमराास्सिद्धिदं पुंसां सदाचारविवर्जिते ॥ ११॥ एकवीरालये वापि कालिकालय एव च।
चएडी़थानेडथवा देवि सन्मन्नुं प्राप्य बुर्द्धिमान् ॥३₹॥
रान्रौ चैवार्चनं कुत्वा जपेदर्कशतं पिये।
मल्लिकाक्कुसमेनैंब चार्चंयेटुपचारतः ॥ १३॥
सत्न रान्देख सिद्यि: स्याचिछ्छुस्स्य वचनं यथा।
तदारंभ्य नु देवेशि (राजिकालवसौकुनेत् ) न च ॥?४॥ सहस्रांकार्यसिस्दि: स्यान्नान्र कार्या विचारसा। श्रथवा मन्त्रराजस्य त्रिसहत्नाट्कृतार्थता ॥३ऐ॥ कएटकं पसपुष्टेंथं मन्चितिं शतमादरात्।
निच्निपेद्रिसदूने पन्तावुछाएनं भवेत् ॥३६॥ काकोलूकद्लं चैव मन्न्रेणानेन बुद्धिमान् । शतवारं मन्न्रयित्वा रिपुगेहे तु गोपयेत् ॥ १७ ॥ विपचाएडालयो: शल्यं $\begin{gathered}\text { दूर्म च च रवौ दिने। }\end{gathered}$ साधितं खिगेगेहे तु निन्निपेप्रविवासरे ॥ ३८॥ पन्तावुचाटनं चैव भवल्येव न-संशय:। घ्यथवा निम्बकीलन्तु यमयोगे तु साधकः ॥ २\&॥ निशि श शत्रुगृहे स्थाप्य गृहोचाटनकारकम्। धर्शकीलमयं तद्वद् ह्युचाटनकरं भवेत् ॥२०॥ घ्रथ पन्रं रवौ भाहंं मन्चितं शतधा प्रिये। कुवेवरसह्रशः शत्रुद्र्रिद्रो भवति धुवम् ॥ २२ ॥ निल्यनायनिर्मित स्मरशमानसे सिद्धिदायक द्राविड भाषा

फा ※ँ कालि•कालि इत्याति शांर् महामहोमन्ध................. । समरए मांचसे सिद्धि दायक सव मन्न्रोमें उत्तमोत्तम इस केरल शाहर मन्च को एकवीरालय (निर्जन स्थान ), कालिका मन्दिर, चरिइका मन्द्दरमें राम्रीको पुजा कर द्वादश शच्च संख्या जपकर मल्बिका पुष्पसे उपचार सहित पजा करे। सात हो रांकिमें शिवके बचन पमाए दिदि होगी। पूवोंकारम्मसे राई नमकका सहस्राहुति हबन कर कार्यंसिद्यि होती है। इसमें कोई विकल्प नहीं या मन्चराजके ३ हजारजपसे कतार्थता होती है। कोयलका कन्टक ( घीठ) सौवार श्रभिमन्वित कर शन्रुके घरमें फैकनेसे पन्नमाःमें उच्चाटन होता है। काक तथा ऊल्बूके पंबौंको इस मन्ग्रसे सौगार मन्चित कर शन्नुके घरमें रविवारको क्छिपा देनेने -पूर्ववत् उच्चाटन होता है। विश तथा चायडालका शल्य (विष्षा) या उनका भष्म रविवार्को लेकर मन्चसे साघितकर रविवारको ही शच्रुचहमें फेंकदेनेसे २४ दिनमें उच्चाटन होता है। इसमें संशय नहीं। ग्रथवा नीमकां कील यमयोमें रातको शन्रुके घरमें ठोक देनेसे ग्होंच्चाटन होता है। श्रथवा पने वेकर रविवारको १०० वार मन्चितकर शभुगुणहमें फेंकदेनेसें कुवेर बुल्य बनी भी उुन्त दरिद्र होजाता है।

एतद्योगः्घ देवेशि नराखां दुर्लेभः कलौ।
गौडशाबरमन्न्रश्व सघ उचाटनः पर:॥र२॥ सर्वशन्रुविनाशः्र पाठास्सिद्धिकरो नृसाम् ।

- ऊँ नमो भगवति विरूपाच्च विक्रुतबदने घोररूपे जनं उनालु करि सर्वोचाटिनि घर चारु चडायुगापदे शिकाडावो ध्राद्रं। जादिमाताके श्यांगु बुंडावुं कालभैरवके श्रांगु। घुडावो कालरूक्ठ द्व: के अ्यांगु । घुडाचो मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मन्त्र ईशवरो |चा। ※ ल गुरुर्रसादम् ।

एतं मन्ं्ं कुलेशानि जपेद्दुर्गालये निशि।
चन्द्रसूर्ययहे वापि प्रजपेस्साधकोत्तम: ॥२३॥
मन्न्रसिद्धिमव्पव्नोति नात्र कार्यां विचारंएा।
मन्त्रेएानेन देवेशि रवौ चाशवत्थसम्भवम् ॥२४।।
CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कीलं वा निम्बकीलं वा चार्ककीलमथापि वा। काकालये प्रेतरज्जु: प्रेतान्नं काष्ठमेव वा ॥२叉॥ षट्सहम्न मन्न्रयित्वा रवौ वारे तु नुद्धिमान् : रान्नौ रिपुगृहे स्थाप्य सद्य उच्चाटनं भवेत् ॥२६॥

यह योग कलिमें मनुष्योंको दुर्लम है। गौड शाजर मन्श पाठ माइसे सिद्धिकारक सर्वश习्रविनाशक तत्काल उच्चाटनकारी ※ नमो भगवति-इत्यादि-इस मन्नको दुर्गामन्दिरमें रान्रिमें या चन्द्र सूर्ं गहएमें साधक जप करे, मन्नलिद्धि श्रवश्य होती है। इस मन्न्यसे रविवारं को पीपल नीम या श्राकरा कील काफके घोसलेमें प्रेतरज्जु पेतान्न या - प्रतकाष्ठो ६ हज्ञार वार श्रभिमन्चित कर रविवारकी रान्चीको शांचुणहमें रख दिया जाय तो तरक्षाल उचाटन होता है ।

श्रान्ध्रं मन्न्रं प्रवद्ष्यामि सघः सिद्धिकरं नृएाम्। स्मराए।द्दैरिवर्गस्य प्रोचचाटनकरं परम् ॥२ง॥ ॐ नमो भगवति वराहवदने ग्लौं करालि हींीं शोरितिं भोजने पीर्यरटठ्गाएा पशुपासमर्विस्ति सिस्ठुं च्रांगु मांसं तिनु भेदस्खु भन्ति चुदे़शोचचाटनं चेपि चापक्कुंटि वानीक्कु कालरुद्राए कल्याएय वीरभद्रना यज्ञवराह मूर्ति य।एा। ङँ गुरुभसादम्। श्ययमान्धंमयो मन्त्रो योगिनामवि दुलेभः। मातृकामर्चयेद्रानौौ पट्सहहत्रं जपेन्मनुम्य२द॥ बतिश्च कुकृटंटं दद्यान्मन्न्रसिद्दिर्भवेद्य ध्रुबम् । सर्पमएड्टूकरल्यं वा मूपकोल्थं विडालजज् ॥२ह॥ शब्यं बा काकोलुकास्थि मृगश्वानास्थिनैव वा। चद्यद्वेरेए संयुक्तं जन्तोश्च रजश्चास्थि वा ॥३०॥ मन्त्रेए मन्त्रितं देवि षट्सहस्रन्तु साधकः। उचचाटनं सम्ररान्रान्नात्र कार्या विचारएा। ॥३?॥ इतिश्रीपार्वंतीपन्नश्रीनित्यनाथविरचिते शाबऱचिन्ताम लौं पश्वमः पटलः ॥

शीध सिद्धिकारक रमरशमान्रसे वैरियोंका परम उन्चाटनकारी श्रान्ध शानर मन्त्र ऊँ नमो भावति-इल्यादि यह श्रान्तशाचर मन्न योगियोंको भी दुलंम हैं। रान्रिके समय मातृक्षपूजन कर ६ हज्जार मंत्र जप कर कुक्कुट चलि देनेसे ग्रट्ल मन्च सिद्धि होती है। सर्प श्रौर मेंडक का बींठ चूछा श्रौर निन्लीका घीठ काक श्रौर उल्बूका या मृग घ्रौर कुत्ते की हड्ड्डी, पवं परहगर वैरवाले किन्हीँ दो जन्तुश्रोंकी हड्डो या रत्तको इस मन्धसे ६े हज्जारचार श्रभिमन्चितकर पयोग करनेसे ज रात्रीमें ही उच्चाटन होजाता है। इसमें कोईे संशय नहीं।

## पष्ठः पटल:

पार्वन्युवाच-तारापतिधरः सान्तात्तारकस्तारवेदिनाम्। शान्तिकर्म वद ख्रामिन् सर्वलोकोपकारकम् ॥३॥ ईश्वर उवाच-गौडं मन्न्रं प्रच्यामि सर्वरोगनिक्तन्तनम्। सर्वभ्रोगदमनं सदा सुखविवर्धनम् ॥रा।
ॐ नमो भगवति कालराच्चिकलाधरे सकलभयक्षरि समस्तरोगभयोगाद्यष्टा संहारिराए अ्रनुकरोगं नाशय२ सकलरोगोचाटनकुमारि खिदाडड नुजु कालरूद्रके घ्राँए। वीरभद्रके आँणु । की बतां ह्नीं ग्लौं कालख्रके श्राँयु हीं श्यादिमाताके श्राँणु मेरी भक्ति गुरुकी शाक्ति फुरो मन्न्र ईश्वरो वाचा। लँ गुरुभ्रसादम्। एतन्मन्न्रं कुलेशानि चसिडकापे तु साधकः । घ्ययुतं प्रजपेस्सतरान्वादेव सुसुद्धिमान् ॥३॥ तदारम्य नु देवेशि नानारोगेषु साधकः। षट्सहह्तं जुहुप़ाद्रान्तौ दूर्वान्नाज्येन संयुतम ॥४॥ बन्भर्म चोष्एतोयेन पानाद्यन्द्ममतन्द्वितः। सर्वरोगविनिर्मुक्तो जीवेद्दूर्षशतं तथा ॥v॥ राजिकालवाएँं होमं गुडं च दधि चैव वा । कुशानाज्येन संयुक्काब्कागमांसन्तु वा प्रिये ॥ध॥ लौकिकाग्नौ हुमेद्रान्रौ प्लाशेन्धनयोगतः। सर्वरोगविनिम्मुंक्षो जीवेद्दूरशतं तथा ॥७़

लवरोन हुमेदेद्दि पैशाचोपद्रवेष्ठ च ।
कृत्रिमेषु च देवेशि हरिर्राहोममाचरेत ॥द॥
पार्वती वोली-ताराश्रोंके पति चन्द्रमाके घारण करनेवाले सूत्मववेद むँ कार प्राव तारके मर्मवेदी योगिवंके सान्तात्तारक हे नाय ! समरत लोकोंका उपकारक शन्तिकर्म कहिये। महेश्वर बोले-समरत रोगों का काटने वाला सभी गकारके दूसरोंके प्रयोगोंका दमन करनेवाला सदा सुख वढानेवाला गौड शानरमन्त्र-ॐँ नमो भगवति-इत्यादि। इस मन्त्रको बुद्धिमान् साघक चरिडकाके श्रागे रातको 90000 दशहजार जपे, सात ही रातमें सिद्ध हो जाता है। तबसे श्रारम्मकर नाना रोगोमें दूव श्रन्न घी मिलाकर रातको ६ हजार श्राहुति हवन करे। श्रौर वह भर्म गरम पानीसे पीनेसे यद्ध्मा घ्रादि संर्वरोगोसे मुक्त होकर सौ वर्ष तक जीता है। एवं राई, नमक, गुड़, दही या कुशोंको घीसे मिलाकर तथा मांसको लौकिकान्निमें पंलाश समिघा योगसे रातको हवन करे। सर्वरोग से विमुक्त होकर सौ वर्ष तक जीता हे। पिशाचों के उपद्रवोंमें तथा कृत्रिम उपद्रवोमें हल्दीका ह्वन करे।

श्रान्धं मन्न्ं प्रवच्यामि केरलं शास्त्रसम्मितम्।
तं मन्न्ं च-पवन्द्यामि श्रणु पर्वंतनन्दिनि ॥ह॥
ॐँ नमो भगवते घ्रघोररुद्राय सकलरोगविध्वंसनाय भूतप्रेतपिशाचसंहारकारएकृत्रिमविध्वंसनाय एहि२ ध्यमुकं उम्मायें वारूँ। उसक्क कालरुद्राऐय। चारुं रोग ते तोरु पिशाचं ग्लै बोट्टं चटकं गल्ले प्रडिचितो वर्त्र तोर नाडि इरंदाल्डु। उमक् अ्यघोरशक्त्ता राएँ। ॐ ग्लौं हैँ श्रघोर रुद्र ※ँ गुरु प्रसाद़म्।

एतत्केरलमन्न्रण्व सिद्धनाथोदितं पुरा।
वीरभन्रालये चैव पुरतोघोरमूर्तये ॥९०॥
पश्भिमाभिमुखे लिदे वृष एा) चेर्जशिवालये।
श्ययुतं चार्चनान्ते तु प्रजपेन्मन्त्रनायकम् ॥? ?॥
0. चन्दनं भस्म चादा़य मन्न्रयेच्छततधा प्रिये। तद्रस्म च पिवेदुछछ्एवारिएा साधकोत्तम : ॥१२॥

## मत्सेन्द्रनाथविरचित:

रोगซृत्याम्यादिक्यो मुच्यते नात्र संशयः। प्रयोगान्ते पुनश्रर्या कृत्वा पश्च्यात्तु यो जपेत् ॥३३॥
केरल्ध शाष्ब सम्मित ※ँ नमो भीववि-इत्यादि श्रान्ध्र शाबरमन्त जो पार्वरती पुत्र सिद्धनाय मस्येन्द्रने कहा था, इस केरल मन्नको घोरमूर्तिं वीर भद्रके मन्दिरमें पश्विमांमिमुख लिख्नवाले शिवालयमें वृषपके पास पूजाबसानमें मन्न्रनायकका दश हलार जप करे। चन्दन, भ₹म लेकर सौ वार ग्रमिमन्तितकर उस भष्मको गरम जलसे पीवे तो रोग कृत्या अहादियोंसे श्रवश्य मुक्त होता है। पयोगान्तमें फिर पू ज्ञाकर जप करे II

कार्ाटमनन्त्रमत्यन्तरोगकृत्याविनाशनम्।
त₹्य समरएामान्रेखा नानारोगविनाशनन् ॥१४॥
ॐ नमो भगवते शरभसाल्रवाय सकलरोगसंहारिऐ चटकोच्छेद्नकराय पेशाचिनीदाराएाय चे हे शरभाय प्रसि शरभ सालनुवा ग्लौौं शरभाय निरोगमाडु मुईल दिद्रो महामायि ध्राये, महेश्वरे नायो, प्रयकालरूद्र नाये, कालभैरव नाये, निरोग माडु दिद्दे निनगे कैलासपति पाये। ※ गुरुमसाद़म् ।

एतं मन्न्रं कुलेशानि वीरभद्रालये तथा।
习्ययुतं ं प्रजपेद्रान्रौ सत्तवासरत: भिये ॥१२॥
मन्ज्रसिद्धिमवाप्नोति देवता च प्रसीदति।
(घर्भर्क)...केन्धनैरग्निहोन्न प्रज्वालीकृत्य साधक: ॥३६॥
तिलहोमं कुलेशानि सहस्ं तर्₹वसंख्यया।

घ्ञथवा भजपेन्मन्न्रं षट्सहस्तं दिने दिने ।
तैनैव शतधा तोयं मन्न्नितं वा पिवेह्सुखी ॥?न्॥
※ँ नमो भगवते - इल्यादि कर्याटि शाबर मन्धके समरए मान्नसे नाना प्रकारके रोंग कुत्या इत्यादि उपद्वव नष्ट होते हैं। इस मन्त्रको बीरमद्रमन्दिरमें रातको ७ दिन्न तक दा इजार निल्य जव़नेसे देवता प्रसन्नता तथा मन्नसिद्धि होती है। श्राककी समिघाश्रोंसे श्रनिनोत्र

प्रज्वलितकर उत्तर मुब होकर श५ हज्जार श्राहुति तिल्ल होम करनेसे सर्व रोग निवारए होता है। अ्रथवा प्रतिदिन ६ हालार मन्त्र तप करे उसीसे सौ वार श्रमिमन्र्रित जल पीचे तो सुखी होता है।

## इति परं प्रवद्यामि नित्गनाथोदितं पुरा ।

अध्रान्ध्रं मन्न्रं प्रवद्यामि चात्यन्तं सुगमं प्रिये ॥?\&॥ ※ नमो भगवते वीरभंद्राय तत्पुरुषाघोरसघोजातवामदे़ेशेशानाय कालकरठाय करालसंहारएाय ध्रमृतं प्रयच्छ्ध नीरोगं कुरु २ एहि २ वीरभद्र गुडारोग कृत्याम्यहालनु अस्मं चाग्र क्ष्यिट वानिकु कैलासपतियाए काशीविश्वनाथनुयाया पार्वतीयाएा है हीं ॐ गुरुप्रसामू II

वीरभद्रालये देवि पूर्ववचायुतं जपेत्। --
तंदारम्य तु देवेशि मन्ज्रेएानेन बुद्दिमान्ं ॥२०॥
शतवारं मन्त्रितक्व भरम वा चन्द्नं तथा।
पिवेस्सुखोष्यातोयेन सर्वरोगहरं परम् ॥२?॥
श्वेतदूर्वयुतं होमं कुर्याद्दशान्द्नेन च।
रोगक्रह्याम्रहादिभ्यः सद्यः शान्तिः प्रजायते ॥२२॥।
यहाँ से श्रागे पार्वतीपुत्र नित्यनायोपदिष्ट श्रान्ध्र शानरमन्त्र कहेंगेयह श्रत्यन्त सुगम है। ॐँ नमो भगवते-इत्यादि इस मन्त्र को पूर्ववत् वीरभद्रके मन्दिरमें दशह़्जार जप करे इस मन्छझसे सौ वार चन्दन. वा भुज्म श्रभिमन्च्रित कर सुंखोष्ण (पीने योग्य) जलसे पीवे तो सर्वरोगहहराए होता है श्वेत दूव सहित चन्दनसे दशहजार श्राहुति होम करे तो रोग क्रित्याप्यहपिशाचादियोंसे तत्काल शान्ति हो जाती है।

घ्रधुना गुर्जरं मन्न्रं वच्द्येऽहंं तव सुत्रते।
शूद्र: किरातो वा देवि सिद्दो अवति निशिचतम् ॥२३॥ ॐँ नमो भगवते गरुडायामृतमेंयशरीराय सर्वरोगविध्वंसनाय कृत्यानेकवविद्नारएाय भूतप्रेतपिशाचोच।टनाय एहि २ गरुडाडु (दु) रोगान् दूरी करो चेक्कुदाडु सटी पिशाचोचाटनाय एहि २ ये

## मस्स्येन्द्रनाथविरचितः

गरुडादू रोगान् दूरी करो चेल्कुदाडु सटी पिशाचकुमारु सारी अ्यादि रुद्रके आयु निर्मूल करो चेत्कुदाद्डु धादिशक्तिके शायु: मारु खिदाधी ऊँ गुरुकी शक्ति मेरी भाक्ति फुरोमन्त्र ईश्वर तेरी वाचा ।

पतन्मन्न्जेए देवेशश प्रज़पेत्तान्द्यसनिधौ।
श्युयुतं चार्चनं सिद्दिं लभते साधकोत्तमः ॥₹४॥ मंच्र्चतं जलानेनेन सर्वरोगविनाशनम् । अ्यवमार्गसमिद्दोंमास्सर्वरोगनिवारएम् ॥२३॥ रान्तिलिब्डोमेन सवेंोगविनाशनम्। प्रस्येकं लवएँं चेंव घंट्साहंहत्रतं कमात् ॥२६॥
क्ञां नातनुक्रियायोगं नाशमामोतिनिश्वितम्। प्राज्स्रत्थाय देवेशि मन्ज्रेणानेन साषः॥२ण॥ शतवाओं मन्त्रितं च ताम्रपान्धस्य निर्मलम्। जलबाँच प्रपिवेद्दे वि मएडलं सद्य (म=ट्क) योगतः ॥२ न\| समजनरोगविनिमुक्तो जीवेद्वर्शतं तथा। घत ऊर्ध्वं मन्चित्रत्व नियमादे़ पार्वंति ॥२₹॥ नाना रोगहरं चैन नानाभूतनिवार एाम्। इ तभ्रीसिद्धनाथविरचिते शाबरचिन्तामरों षष्: पटलः ॥ श्र习 गुर्जर शानर मन्ध कहेंगे-जिसके साबनसे किरात हो चाहे शूद भी हें, निष्वित सिद्ध होता है। ॐँ नमो भगवते-इत्यादि मन्त्रो गरुड़े कार पास पूजा करके दशहजार जॉ करनेसे साधकको fिद्धि मिलती है। मन्ध्रित जलपानसे सर्वरोगविनाश होता है। अ्रपामार्गसमिषाके होमसे सर्वरोगनिवारए होता है। राई लबएके होमसे सर्वरोगविनाश होता हे। कमश: प्येयक लबया ६ हजार श्राहुंति होम करनेसे श्रौरों के श्रभिचार प्रयोग नष होजाते हैं। प्रातः उठकर इस मन्नसे ताम्रपान्रका निर्मलजल सौवार श्रभिमन्चित कर पीनेसे सर्वरोगोसे मुक्त होंकर सौ वर्ष जीता है। इससे उपर नियमसे श्रमिमन्चित जलश्रादि नानारोगहर तथा नानामूतनिबारक होता है।
CC..0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

## शाबरचिन्तामएए:

## सप्रमः पटब:

श्भम्बिकोवाच-पह्बवि ब्णुसुरेशेशादिसुरासुरनरार्चित 1 शम्भो विद्देधएां योगं वद शाबरसम्भवम् ॥श।. ईश्वर उवाच-गौडीविद्दे जलो मन्न्रः सद्यः सिद्दिकर: कलौ। घ्रादिनाथोदित: सान्काज्लजासंजवर्दाते ॥रा॥ ऊ घर्मटिके २ कर्मटिके २ घोरे घोरने ब्रमुका गुलोर्विद्दे षयां

 ग्गरुभसजपदा

एतन्मन्कुलेशानि माट्रो बीनियो काकोलूकन्लं चैव चामइद्विएतीयनी

 रामलद्ममायोग्चैव सघो विद्दे धां अवेट्य काकोलूकदले मिन्नुपुभयोर्नाम चालिखेत। तद्दलं मन्त्रपूर्वन्त्ड जुहुयां्जेतपावके ॥र्षी। श्रयुताद्युग्रामविद्धे षो भवत्येव न सशयः। काकोलूकस्य मांसं नु निम्बतैलसमन्वितम \|७\| घ्ययुताद् ग्रामविद्दे जो भवत्येव न संशयः। निम्बार्कपन्रमादाय ग़रं तैल्लेन संयुतम् । ॥C\| उभयोर्नाम चालिख्य हुतं पन्द्वयं तथा। एवं चायुतहोमेन कुलविद्देषएां भवेत् ॥ह॥ जगदम्बाने का वह्मा विष्णु इन्द्रादि देव दानव मानव पूलिए शम्मो ! विद्दे बय शानर मन्न कहिए, ईईश्र नोले-हेदेविं ! सान्ताइ ग्रादि नाथ मःंयेन्दोपदिष्ट तलक्काल सिद्धिदायक गौडी विद्देषय मन्न ऊँँ बर्मटिके इत्यादि मन्चकों पूर्वंब्त् मातृका निकट में दशहजार जप करनेसे

मन्त्रसिद्धि होती है। काइपपत्वको वायें हाथकी उल्बूके पत्तकौ दाहिने हाथकी श्रनामिका श्रौर श्रधुकुत्ते ग्रन्यितूपसे जोडकर रात्रिके समय दशहजार तर्षय दन्चिएामिमुख होकर करेतो रामलन्द्मएका तर्माल विद्धंबए होता है। श्रौरकी तो जात ही क्या ? काक तथा उल्लूके पन्तमें मिन्न २ दोनोंका नाम लिख़र उस पत्तको मन्घवपर्वंक चितांकी श्रन्निमें हवन करे, दशहजार संख्यासे समम्र पाममें विद्धंष हो जाता है। हसमें सन्देह नहीं। नीमके तेलसहित काक तथा उल्जूका मiंस दश्रहजार श्राहुतिपूर्वंबत् हवन करे तो निस्संशय गावँ भरमें बिदे व हो जाता है। नीम तथा श्राकके पत्ते पर विषतेल़से दोनोंका नाम लिख दोनों पातका होम करनेसे दशहजार संख्या पहुँचते. ही कुलभरमें विद्दे चए हो जाता है। केरलं मन्त्रराजं च विद्दे पएकरं परम्। वद्द्येऽहं नित्यनाथोक्कं सद्यः सर्वार्थसाधकम्यम॥ ऊ ग्लौं वराहवदने विकटाझ़्नि सदा बिद्वेपएाकारिए़ि सकलजनमनःसंहारकारिरिय विद्देषसाभिवर्धिनि ग्लौं घ्यमुकं गलौं विद्देषय हुँ। असुकं हुँ विद्देषय २. ऐक्म्युत्दि नाशय २ कोधं वर्धय २ हुँ हीँ"ँुँ। विद्वेषय करो विकलनुद्धि करो फ्रुरो मन्त्र ईश्वरे दे वाचा।
एतद्विद्ध षवाराहीं पूर्वंमेवायुतं जपेत्।
मातृकामर्चंदेद्राौौं बलिपूर्वं वरानने॥ ०॥
मन्न्र्रसद्द्धिमवान्नोति देवता च प्रसीदृति। तसः परं प्रयोगः्ञ कर्तब्यो गुरुमार्गतः ॥? ?॥ त्कालनस्थानमासा (शि) घ रजकस्य रतानिशा। तत्रस्थं जीर्थांवघ्घक्य सङ्म्याहेत्साधकोत्तमः॥१२॥ पुन्रेकरवौ रान्रौ जुहुयात्पटमादरात्। खएडं खएडं च प्रत्येकं चतुरझुलससम्मितम ॥३३॥ एरएडतैलसंयुक्तं तद्युतं ज़ुहुयानर: । गृहं वा नगरं वाथ सद्यो विद्दे vएां ं रजेत् ॥९४। मार्जारसमकं 习ाह्यं तावन्मूपकमेव च।
CC.0- Jangamwadi Math C̄oHection. Digitized by eGangotri

## शाबरचिन्तामएश:

भित्वा खएडं विधायाथ बदरीमान्नमेव च॥१२॥ जुहुयादयुतं रान्रौ च्रिदिनान्कुलसुन्दर्री। ₹एविद्धे छां भूत्वा शन्रुयुद्द न म्रियते $॥$ ६६॥ काकोलूकस्य मांसं नु सङ्म्महेत्साधकोत्तम:। जुहुयादयुतं रान्रो ग्रामविद्दे धाएं भवेत् $\|ः ७\|$ छुष्पासर्पंस्य मुएडन्तु नवसंख्याकमेव च। प्रत्येकं सङ्पहहेद्धीमान् बदरीफ़लमान्रकम् ॥乡द॥ खएडं कृवा हुतेत्राधौ भौमवारे तु बुर्द्यिमान्। अ्रयुत जुहुयान्मन्जैरद्ध पत्यागपूर्वकम ॥?ह॥ विद्धे छाएं भवत्येव नगरे जन्तुजीवने। किं पुनझ्रात्ममु(यु)क्तानां शह्नरस्यापि भाषितम् ।२०॥ बिद्दे बामनु: कर्ता सर्वसिद्धे: सुपाचनः। आ्यादिनाथेन कथितः सत्य श्याभ्रचर्यारक: ॥२१॥ मन्त्र-ऊँ हुँ २ हौ हुँ २ ग्लौँ हीँ ग्लौं दूवगे २ विद्देपए माडु दिद्रे नितगे घ्रादिशाक्ति यायो कैलासनाथ नाये ॐँ गुरुर्ण सादम्। $=$ एतन्मन्न्रं कुलेशानि मात्कापूजनान्तरे। अ्रयुतंत्रजपेद्देवि मन्त्रसिद्धिमवान्तुयात् ॥२२॥ पूवेंवद्धोमकर एान्मन्त्रिस्द्धिमवाज्नुयात्।
नित्यनाथकचित तल्काल सर्वार्थसाघक केगेल विद्देधला शानग्मन्न्र※ँ ग्लौं वराह इल्याद विद्दे बवारहीको पूर्वंत् दशहजार जप करे रात्रि को मात्काकी पृजाकर बलि देनेसे मःच्रसिद्यिभी होती है देवतामी प्रसन्न होती है। तदनन्तर गुरूपदिष्ट मार्गसे प्रयोग करना चाहिए। साषक रातके समय घोचीके कपड़ा घोनेके स्थानमें जाकर वहाँसे फटे चियडे सड्यूह करे। पुन: एक रविवारकी रात्रिमें उस पटका ग्रादरसे होम करे। चार चार श्रहुलुलके खएड करके तेलमें भीजाकर हवन करना चाहिए। गह वा नगरका दुर्त विद्ध धए होता है। $७$ विल्ली ं० चूहे लेकर काटकर वेरके बराबर उनके मंसखख्ड रातकों दशहजार हवन करे तो तीन दिनमें
 मांस रातको दशहजार हवन करनेसे प्रामका विद्दे बए होता है। ह काले सर्पके शिर लेकर पत्येक वेरके बराबर हवन करनेसे प्रामका विद्दे पए होता है । $\varepsilon$ काले सर्पके शिर ल़ेकर भृ्येक वेरके बराबर खडउकर मद्नल ल्रवारकी रातको मन्习习से २० हजार ह्वन करे तो जीवजमु नगरमें भी विद्धे बए होता है। शिवका वचन सत्य है। आ्यादिनायकथित सर्वसिद्धिकारक विद्दं ब्य शाबरमन्र पावन सल्य तथा श्राश्र्यंक्रारक है। ॐ हुँ २—इत्यादि इस मन्न्रको मानृक्रापूजनके श्रनन्तर दशहजार जप करे मन्धसिदि होती है। श्रौर पर्ववत् होम करनेसे मी मन्नसिद्धि होती है।

इतः परं गुर्जब्च मन्त्रं कं वदाम्यहम् ॥२३॥
ॐँ नमो भगवर्ती कालरानी कान्हेश्वरी कलहशत्रुविद्देषिए। क्रोधपूरितशरीरे हाँ श्रमुकामुकं विद्दे पय २ श्यमुकाया श्रमुकाय गोन्याघनद्विद्वेषय हुँफट्।

एतद्गुर्जरकालाख्यं मन्न्र्राजं सुपावनम्।
पूर्वर्वद्विनियोगा्च जपह्रोमादिकं तथा ॥२ह॥
यहाँ से गुर्जरकाल नामक शावरमन्र्र ॐँ नमो भगवतीइत्यादि इसका पूर्वंत् जप होम विनियोग श्रादि करनेसे पूर्ववत् कार्यंसिद्ध होती है।

श्चान्ध्रं विद्दे षएां मन्न्रं सत्यं तन्सुगमं तथा।
सघ्यो विद्वेषएां चैव भवत्येव न संशयः ॥ २थ॥
ॐँ नमो भगवति हूँ २ विकटाझि ग्लौं २ ज्येप्टादेवि सकलशन्रुविद्वेष्याकारिएिए ध्रमुकामुकयोः, श्चमुकाया श्रमुकाय काकोलूक्कवद् गोष्य।घवद्विडालमूपकवद् विद्वेषएां कुरु २ ग्लंँ ज्येष्षाहुणय नस:

एसद्विद्वेषयां मन्न्रमान्ध्रदेशगतं तथा।
पूर्ववन्जपहोमनच विनियोगं तथोच्यते ॥ २६॥. साष्षपेन (खा) च पिष्टेन पुत्त्तीं चैव कारयेत्। सर्वाई़ बदृरीजातान् कएटकान्ं रोपयेत्तथा।॥ २७॥

## शाबर्रचिन्तामझः

कालरोचारनानलस्य समीपे सम्यगर्चंयेत्। पच्ताच्छत्रुगहहे देशे विद्देषो जायते धुवम् ॥२८॥ मन्न्तितन्वारनालन्च न्रिसाहसं कुलेश्वरि। खाने पाने प्रदातव्यं रिपू ाiं यत्नतोऽनचे ॥ २ह ॥ . घ्रत्यन्तं द्वेषमावन्नोति देहसमम्बन्धिनामपि। घकारएकलिं चैव प्राप्तुवन्ति न संशयः ॥३०॥ पच्तमान्वेया म्रियन्ते शस्त्रघातेन पार्वाति। एतन्मन्न्रं निशाकाले शत्रुपुद्धिश्य साधकः ॥ ३? ॥ घ्रयुतं प्रजपेद्धीमान् सद्यो विद्देषएां भवेत्। धार्मिकाय नं कर्त₹यं देवताशापम।न्नुयात् ॥ ३२ ॥ इति शीनित्यनाथसिद्य प्रीते शाबरचिन्तामयौं सप्रमः पटलः। ॐँ नमो भावति इत्यादि सच्य हुगम तर्काल विदे धएकारी श्रान्ज्र. शाबर मन्न्का पूर्ववत् जप होम विनियोग करने से कार्यसिद्धि होती है। ससों के ग्राटेकी पुतली बना कर सर्वाज्ञामें केरके कॉटे रोपे, सम्यक् पजा करे तो पत्त भरमें शन्रुके घरमें देशमें निश्चित विद्देज होता है। ३ हजार वार मन्चित आर्वारनाल ( काडी ) को खान पान में शत्रु को यत्न से देने से उसके देह सम्घन्वियों के साथ भी ग्रत्यन्त हेंप होता है। विना कारा ही कलह करने लगते हैं। शस习习हार से पत्त् भरमें मर जाते हैं। साघक शन्रुको उद्देश्य कर रान्रीको दश हजार जपे, तत्काल विदे पय होता है।

## घ्रष्टमः पटलः

पार्वन्युवाच-नमसे देवदेवेश करुणाकर शङ्టर। नानास्तर्भप्रयोगब्च बद मे प्राएाबब्लभ ॥ १ ॥ ईश्वर उवाच-स्तम्भनं दुलंभं लोके नानायोगळच योगयोः । तद्विधानं प्रवद्यापम तव पर्वतनन्दुनि ॥२॥ श्धाघं गौडं महामन्त्रमादिनाथेत साद्रात्।
उक्ञं मन्न्रं पवन्त्यामि सघः सिद्यिकरं परम् ॥३!
※ँ ह्वीं चडवामुखि ह्रीं सर्वदुष्टानां हीं वाचा मुखं स्तम्भय ह्वीं बुद्धि नाशय ॐँ ₹वाहा।

एतन्मन्न्ं महाश्चर्यं गौडं मन्न्ं सुपावनम्। सातृकामर्चंयेद्वाचो निशाभौमे तु बुद्धिमान् ॥ ४ ॥ रानौ च दीपिकां दद्याद्गोघूतेन कुलेश्र्वरि। जपेद्युतसस्याबच पनचरान्रेएा साघक: ॥ 义॥ तदन्ते चार्चनं कुर्याक्कुलमार्गे या बुद्दिमान्। मम्न्रसिद्दिमवाप्नोति द्वेवता च प्रसीढ़ित॥ ६॥ चाएडालचितिभर्माथ भौमवारे तु चुद्धिमान्। रात्रौ नग्नेन सझृब्ब दन्ति लाभिमुखेन च॥७॥ तद्रस्म च कुलेशांनि मन्च्रेखानेत साधकः। सहसं मन्न्रयेद्रान्तौ भस्मकं वामपाशिना॥ ८॥ शन्रुमूर्धि विनिन्तिप्य मन्त्रिते साधकोत्तमः। एवन्बु त्रिदिनं कृत्वा जिद्धास्तम्भनमान्नुयात् ॥\&॥ प्रस्तं छुर्वा शान्रुनाम मन्त्रमध्ये लिखेन्नरः। वेष्येज्जनिमन्त्न्नु मी(ई)शानादिक्रमेएा च॥१०॥ तर्पन्नमर्कदुगचेन लेपनं सम्यगाचरेत्। बिभीतकसमुद्यूतकोटरे वद्विनिन्निपेत्॥ १? ॥ स रिपुं मासमाच्चेश श्रोणनिद्धादिक त्रिये। स्तम्भितन्तु भवेत्सत्यं शिवस्य वचनं यथा॥१२॥ मन्ध्रमध्ये साध्यनाम प्रतंतं कृत्वा डु बुद्दि मान । जुहुयान्तालकं राबौौ चायुतक्न कुलेश्वरि ॥ १३॥ जिह्बासतम्भनमाव्नोति बृहसपतिसमोरपि वा। एतन्मन्न्रं महेशानि नित्यकर्मशतं जपेत्य ॥४॥ शत्रुजिह्दास्तन्भनक्च पर्यायेएा कुलेश्वरि। घ्रादिनाथोक्रविद्या च ह्यत्ग्न्तं सुग्रा कलौ॥ श२॥ नाना प्रकार का स्तम्भन हुर्लम योग है। उसका विघान कहते हैं, श्रादिनाथ मत्येन्द्रोक्त श्रा|्य गौड महाशांकर मन्त्र सद्यः सिद्बिकारक

है। ऊँ हींइह्यादि महाशचर्यकारक है। भौमचार की रान्ति में गौके घीका दीपदान करे। पाँच रात तक दश हजार जप करे जपान्त में पूजा करे कौलिक मार्ग से सिद्धि होती है श्रौर देवता भी पसम्न होती है। मङ्नलवारकी रातको न⿳亠口冖丁口㇒ होकर दन्तिए मुब करके चरडालकी चिता－ का भह्म लेकर इस मन्ध से रात्भिमें हजार बार घाये दाथ से श्रभिमन्च्रित कर，शन्रुके शिरमें फेकने से तीन दिनमें जिह्दास्तम्भन होता है। मन्श्रके मध्घमें शन्रका नाम प्रस्त कर लिख कर जनिमन्घसे वेष्टन कर ईशानादि कमससे，उस प₹को श्राकके दूघसे पूरा लेपन कर，चहेडेके पेडके कोटरमें फेक देनेनेसे उस शशुकुके श्रॉंब－कान जिछाहा ग्रादियों का र्तम्मन एक मास－ भरमें हो जाता हे，यह शिवका वचन सत्य है।

मन्भमध्यमें साध्यका नाम भस्त कर（लिबकर）रात्रिमें दश हजार ताल पन्रका हवन करनेसे वृहपपतिसमानका भी जिए्लास्तम्भन होता है। इस मन्बको निल्य कमं（ ग्रर्क १२）सौ वार जप करनेसे पर्यययसे शहुलिहा｜सत्मन होता है। ग्रादिनायोपदिष्ट विद्या कलिमें ग्रत्यन्त सुगम है।

केरलीं सतम्भिनीं वियां वच्द्ये हहं कुलयुन्द़रि । पाठात्सिद्धिकरं मन्च्रमत्यन्ताश्रर्यदायकम् ॥१६॥
※ँचुँ हीँ बताँ मलयालभगवति हीं कॉं दुष्त्तम्भिनि हीं
 एषा केरलविद्या च सर्वतन्त्रेषु गोपिता।
सोमसूर्योपरागे तु समरोन्मुखितं प्रिये ॥？७ उपदेशशक्रमे सौव मन्न्र्यहएामाचरेत्। जपकाले कुलेशानि नाम चेन्द्रियमुच्चरेत् ॥१न॥
जिद्बास्तम्भनमान्देया शन्रुनाम समुच्चरेत्। तर्पयेदयुतं सम्यक्तर्मयामींति सादृरात् ॥？ जिह्वास्तम्भनमाल्नोति नात्र कार्या विचारएा। पाठमान्नसे सिद्धिकरी श्रत्यन्त श्राश्चर्यदायक केरली रतम्भिनी शाबरी विद्या－むँ हीं－इत्यादि यह सर्वतन्त्रोमें गोपित है। सूर्यंचन्द्रगहए या

युद्धारम्मफे समय गुरूपदेशक्रमसेही मन्चदीच्बा लेवे। जपके समय नाम तथा स्तग्मनीय इन्दिययका नामोः्चारया करे, जिब्दाध्तम्मनमन्नसे शन्रकानामीचारखा करे, तर्षयामि कह कर श्रादरसे सम्यक्प्रकार दश हजार तर्षय करे, जिह्दास्तम्भनसिद्धि होती है, कोई संशय नहीं। कर्गाटटमन्न्रं बच्द्यामि स्तम्भनाग्यूं सुपावनम् ॥२०॥ घ्रादिनाथेन कथितमत्यन्ताश्रर्यकारकम् ॥
 कस्य सर्वेन्द्रियाएिा सत्वम्भय २ हीं फालरान्ति कान्हेश्ररि हीं स्वाहा।

> एत₹्कर्नीटमन्न्रन्तु स्तम्भनाख्यं सुपावनम ॥२१॥ स्मरएान्मन्न्रराजस्य कार्यसिद्बिमवान्तुयात्। पीतद्रवये ए जुहुयादयुतं कुलसुन्दुरि ॥२२॥ स्तम्भनक्च भवेच्छीघं नात्र कार्या विचारणा। तालपन्रे लिखेन्नाम कर्गाटाख्यं च शाबरम् ॥२३॥ वेष्ट्येन्मन्त्रवएँाँचु बज्रीज्तीरेए संयुतम्। पेषितं तालकं देवि सम्यग्लेपनमाचरेत् ॥२४॥ जुहुयान्मन्त्रपूर्वश्व तर्पये दयुतंत पुनः। निशाभौमे समारम्य भुगुवारे समापयेत् ॥२र॥ जिह्दास्त्नक्भनमाप्रोति बृहर्पविसमो रिपु:।

ग्रादिनाय लोकेश्वर मस्येन्द्रोपदिष्ट पाबन स्तम्मन शाबरकएाटमन्त्राज श्रत्यन्त श्राशच्चर्यकारी ※ँ हीं-इल्यादि यह समर्यमानसे सिद्धिदायक है। पीले द्रठ्यसे श्रयुत (दश हजार ) होम करे शीभ स्तम्मन होता है। ताडपऋमें नाम तथा कर्एाटच़ाबरमन्चलिखे सेहुयडके दूघमें भीजा कर मन्त्रवर्योंसे वेष्टन करे, पीस कर लेपन करे, मन्यसे होम करे, ग्रुपत तर्पय करे, मझ्नलकी रातको श्रारस्मकर शुकको समाप्त करे, वृृस्पतिके समान शन्रुका मी जिद्धास्तम्मन होता है।

शान्ध्रं मन्न्ं प्रवद्यामि ह्यत्यन्तयुगमं कलौ ॥२६॥ भादिनाथेन कथितमनौप्यम्यगोचरम्।

## शाबरचिन्तामझा:

ॐ नमो भगवते श्मशानरुद्राय सर्वजगद्वव्यापकाय हौं सरं-
 श्मशानगरुद्राय (डाय) न्चिप्रपन्नाय एहि २ जिह्दां स्तम्भय २ हीं २ खाहा।

एतन्मन्न्रं कुलेशानि प्रजपेत्र्शेतकानने।
अ्ञयुतश्व रवौ रान्नौ नग्नो दद्निएादिड्मुखः ॥२७॥ मन्न्रसिस्द्धिमवान्दोति देवता च प्रसीदति। प्रेतभर्म समादाय तिलतैलेन संयुतम ॥२८॥ खएडं पिएडं कृतं चैच जुहुयाद्रजकालये। सहसंग्रं स्त्भ्भनं चैव भवत्येव न संशयः ॥रह॥ चितिकाष्टेंत प्व्वाल्य वन्हिमएडलमेव च। करझ्ञबीजं जुहुयात्षट् सहस्त कुलेश्वरि ॥३०॥ यद्यदिन्न्त्रियमुघार्य हूयते च कुलेश्वरि । तस्सवं स्तम्भनं चैव भवत्येव न संशयः ॥३?॥ इतिशीनित्यनाथपार्वतीपुन्त्रयीतेशा बरचिन्तमखावष्वमोऽयं पटलः। श्रादिनाथ मत्येन्द्रकधित श्रनुपुप श्रगोचर अ्रान्भ्रशाइर मन्त्र कलिमें ं्रंंय्यन्त सुगम है। ※ नमो भगवते इत्यादि मन्चको रविवारके रातको नग्न होकर दन्विएामुब कर श्मशानमें दश हज्जार जप करे, तो देवताकी प्रसन्नतासे मन्धकी सिद्ध होती है। चिताफा भर्म लेकर गुड़ तथा तिलके: तेलके साथ विएड बनाकर घोघीके घरमें हवन करे, तो ३००० सेही स्तग्मन होता है, इसमें कोई सन्देह नहीं। चिताके फाहुसे श्रग्न कुएडको प्न्बलितकर ६ हज्जार करजबीज हवन करनेसे जिस जिस इन्द्रियका नाम लेकर हवन किया जाता है उस-उस इन्द्रियका श्रवश्य सत्मन होता है, इसमें संशय नहीं।

## नवमः पटलः

पार्वल्युजाच-नमः कैलासनाथाय शह्कर चन्द्रशेखर। ज्याकर्षशीं महाविद्यां ज्रहि में कुलनाथक ॥१॥ शिव जवाच-गौड़ीमन्त्रेषु देवेशि सिद्धवीरस्य साधक:। विधानश्च भवद्ध्यामि तब पर्वतनन्दूनि ॥२॥

साघको रविवारे तु संङ . पहहेच्छन्रु (व) मादरात् । राज्रौ तस्य हृदि स्थित्वा बन्धपाशान्वितं ततः ॥३॥ श्रावाहयेत्कालीमान्रेम्म|सखएडसुता ( रा ) न्वितम् । बलिमन्त्रेश देदेशि वद़ने निन्चिपेच्छ्चनम् (च्छुुभं)॥४॥ सहस्तन्रितयेनैव वीरः भ्रत्यन्तमान्तुयात्र । एतद्वीर्रवधानबन एकान्तेनाचरेस्युर्धी: ॥र\| च्रावाहनमतु:- $\begin{gathered}\text { नमो भगवति कालरांत्रि करम्भनिलये }\end{gathered}$ कान्हेश्वरि शमुक वीरमानयान्र स्थापय (नं) हैँ ख्वाहा। गन्ध-पुजपार्चनादिदानमनु:-्होाँ नमो भगवते महावीरव़र्याय मनुजनवर्यायासहशूराय सकलजनवितुत्लाय भच्ययव़्लि भंक्ष २ ₹वाहा। एतन्मन्⿹्रेया शववक्ने मांसखयडं सुरान्वितं दापयेत्। तथा कृते वीरः पत्यन्तमाव्नोति। सुदर्शनमन्त्रे दिग्वन्धनं करव्वा ही वीरभद्राय तन्र स्थानं गच्छ - इं्युकाविलि २ वराय स्वाहा ।

गौड शाबर ग्राकर्षेशी महाविद्या सिद्धबीर साघनका विघान-साघक रविवारको श्रादरसे शबका सङ् ग्रह करे, रात्रिको उसके छातिमें बैठकर बन्ब पाश सहित श्रावाहन करे कालीमातृकाको सुरायुक्त मांसबशड बलिमन्ब्रसे शवके मुखमें डाले । तीन हजार संख्या पहुँचते ही बीर प्रत्यन्त हो जाता है। इस वीर विषानको एकान्तमें करे। ङँ नमो-इल्यादि श्रावाहन मन्न है। हाँ नमो इत्याद्रि गन्बपुष्पपूलादिदानका मन्त्र है। इस मन्धसे श्शवके मुखमें सरासहित मांसबएड देनेसे बीर पत्यन्त होता है। सुदर्शनमन्चसे दिख्वन्धन करके-हीँ वीर-इत्यादि मन्च्रसे विसर्जन करे। घर्ं चोत्तरदेशे तु कर्म घह्म तु दन्चिये। पूर्वे ठु म (त) न्त्रमार्गस्था मन्त्रशास्च्रन्च केरले ॥६॥ ※ँ ※ँ हीँ कों नमो मलयात्लभगवति न्दिपावेशकारिएिए एहिए। रविवारे तु देवेशि मृतकस्यासु बुद्धिमान् । रान्रौ तु सम्यगाकृष्य तरुमूलेत तु साधकः ॥०\| निन्निपेत्स्वीतकेनैव ज्रातनेन कुलेशवरि। पूर्वोक्तावाहनेनैव मन्त्रेशैव च साधकः ॥दो

शतवारं मन्न्रयित्वावेशसिद्धिमवान्नुयात्र। तद्दीरस्य कुलेशानि मांसखएडं नु पार्वति ॥ह॥ मध्ये(घे)न च युतं देयं यथेष्टे वाचिछ्छितंतं तथा। कथं चैतक्कुलेशानि तन्कन्यादिकमेव च ॥?०॥ वाच्छितां कन्यकां चैव ््यानयिष्यति निश्वितम ।
बदा विद्यास्सुसिद्धन्नु कन्यावीराष्यमेव च ॥??॥
अ्रक्क उत्तर देश में. कर्म वह्ल दन्विएयें, पर्वमें तन्च्रमार्ग, केरलमें मन्न्रशास्त्र है। साबक रविवारकी रातको मृतककों खींचकर हृत्तमूलमें रखे, पूोोंत्त श्रावाहन मन्习से सौ वार मन्चित करनेसे श्रावेशसिद्धि होती है। उस वीरको मद्ययुक्त घयेष्ट मांसडखड देवे तो कन्या श्रादि वाच्छित सिद्धि करता है।

करांटीं कर्षसां विद्यां तव वच्यामि सुत्रते।
सारात्सारतमं चैव शाबरीमन्न्रविद्यया ॥२२॥ गरुडालयमध्ये तु स्थापयेच्छ्चे तमृत्तिकाम्। मएडलान्ते तु संग्राहा रवौ साधकपुझ्धवः ॥१३॥ तन्मृत्विकाश्य गिरिजे गृहीत्वा वामपाशिना। इमशाने प्रपेन्मन््रमयुतं दत्चिएामुखः ॥१४॥ तन्मन्त्रश्ब प्रवद्ष्यामि गुरुमार्गालक्कुलेश्वरि। कुरु सम्यगुमहपं नु तथा मन्ध्गुरुोर्विना ॥धं॥ ॐ नमो भगवति इ्मशानवासिनि सर्वभूतसंसेविते एहि ?
 एतन्मन्न्रेएा देवेशिं रविरांौौ सुसुद्दिमान्। तदन्ते च कुलेशानि महिषाइ्यं च दारुएम् ॥३६॥ वैशाखन्येप्षपर्यन्तं प्रत्यन्त्रं भवति धुरम्। तेनैव घैशाने च $\cdots \cdots$ भ्याकर्षखमतन्द्रितः ॥२७ भवत्येव कुलेशानि शाश्चर्यं कुलेस्य वन। सारका सार करांटी ग्राकर्षयी शाबरीमन्चविद्या काहते हैं-गरुडके घोसलेमें सफेद मिट्टी रखे, मएडलान्तमें रविवारको लेवे, उस मिटटी को

वायें हाथसे पकड़ कर श्मशानमें दन्तिएमुख कर दश हजार मन्त्रजप करे, वह मन्न्र कहते हैं - परन्तु गुरमार्गंते उस मन्त्रकी दीच्ता लेनी चाहिए, श्रन्यया सिद्धि नहीं होती। ऊँ नमो भगवति इत्यादि इस मन्न्रका रविकी रातको जप करे मैंसके घीसे हवन करे वैशाख न्येष्ट पर्येन्त श्रवश्य प्रत्यन्त्त होता है। सावघान होकर साघना करने से श्राकर्षए सिदि होती है।

घ्रान्ध्रं मन्न्रं प्रवच्यामि, घत्यन्ताश्रवंयक्यरकरम् ॥१८॥ ध्धादि नाथेन कथितमागमेषु सुगोपितम्। रविवारे कुलेशानि बीरयुद्दमृतस्य च ॥९ः॥ तस्यैव दहनस्थानं तद्रान्रौ साधकोत्तमः। अ्यरलीकीलमादाय सूत्र विशत्वता (करा) इ्मकम ॥२०॥ सङ ग्रहेत्साधकर्तन्र शमशानमध्यदेशतः । तर्कीलरोपां कृत्वा तस्य सूनं तु वेष्टयेत् ॥२?॥ तंस्सून्रेख समीपे तु बदुध्वा तु तरमूलतः। वाममन्न्ं जपेद्देवि मांसमध्ये (घे) न संगुत्तम ॥२२॥ सहस्रजपमान्रे सा वीरभूतं स संविशेत्।
© ऊँ नमो वीरायात्यन्तबलपराकमाय आगच्छछ २ वर्लि गृहाएा २ कार्यं साधय २ हुँ फट् ।

अ्यनेन मन्च्राजेन वीरस्तन्र समाविशेत्। बर्लिं मांसादिकं दघाद्वाब्कितं तस्य पार्वति ॥२३॥ तद्धीरो वशमायाति च़लेनाकषंको यथा। पूर्वेवद्ररमयोगेन दद्यादिंदं च पार्वति ॥२४॥ तन्रैव प्रजपेन्मन्न्ं पूर्वोत्तं दन्चिएामुखः। सद्यो भवेदाकष्षश्यमत्यन्ताश्चर्यकारकम् ॥२र॥ ॥
※ँ घघ्याँ ह्नाँक्रों कालरात्रि कान्हेश्वरि श्रसुकमाकर्षयाकर्षय हुँ फट् एतन्मन्त्रं कुलेशानि इमसाने चायुतं जपेत् । श्मशानवासिनी तन्र सान्त्ताल्कारवती भवेत् ॥रद॥

## घ्याकर्षयादिकार्ये वशीकरएकर्मशिय।

सद्य एव भवेच्छ्धीघं शित्रस्य वचनं यथा \|P७\| इति शीशिवसुतश्रीजित्यनार्थनिर्मिते शाबरचिन्तामयौौ नबमःपटत्तः। श्रागमोमें गुत्त श्रादिनाथ मस्सेयेन्द्रोपदिष्ट घ्रत्यन्त श्राशचर्यकारक श्रान्भ्र शाबर मन्न कहते है-रविवारमें बीर्युद्दमें मरे हुए वीरके चितास्थानमें उसी रान्निको साधक श्रुली क्कुटिल कीज श्रौर सूत्र लेकर श्म शानके मध्यदेशमें उस कीलेको गाड कर वीस हाथ वह तागा उस पर लपेट कर पासके वृत्तके मूलके साय बौँ देवे, उसीके ससीप वैठकर वाम मन्त्रका एक हजार जप करे, मांस मघ्य देवें वीरभूत समाविष्ट हो जाता है। ऊँन्नमो वीरापनहत्यादि इस मम्नराजसे वीर उस कील सूत्न में समावेश करता है। मझ्य मंस्सादि उसको वाईिछ्छत बलि देवे, वह वीर वशमें होकर तत्न्तय श्राकर्षक होता है। पूर्वोंक भरम्मयोगसे बलि देकर पूवोंक प्रकार से दत्निएमुख कर बहाँ पर जप करे, श्रत्यन्त श्राश्चर्यंजनक तलकाल श्राकर्षएयिद्धि होती है। ऊँ श्राँ-इत्यादि इस मन्न्को शमशानमें दश्र हजार जपे तो श्मशानखासिनी देवी सान्तात्त दर्शंन देती है ग्रौर श्राकष्षएादि वशीकरए पभृति कर्ममें वक्कल सिद्धिदायनी होती है, शिवका बचन है।

## दशमः पटलः

पार्वन्युवाच-श्रादिनाथोदितां विद्यां मारसीं लोकमारए। वद मे करुएासिन्धो सर्वमन्न्रविशारद ॥?॥
शम्भुरुवाच-गौडीं मारएाविद्यां च वच्येेहहं कुल स्युन्दरि। सुगमाब्सुगमां विद्यां वद्द्ये मारएकर्मंशि ॥२॥ कालरान्री महादेवी गौडदूशेषु विश्रुता। तस्याः संस्मरााल्लोके सद्यो मारएकारएाम् ॥३॥ काल्लरात्रीमहामन्न्रं विना माग्यामिचछ्छताम् त:)। तस्य कष्टं कुलेशानि सिन्धौ सैकतवर्षवत् $18 ॥$ जै० नमो भगवति कालरान्रि नररुधिग्मांसभिये कालमृत्युर्वरूपि. एि अ्रमुकं ते पथ़कं मह २ (गहाएा २) शोखितं पिब २ मांसं भक्ष२ निवैरिर क्रुठ २ ह्ञें फट्।

एतन्मन्च्र्व देवेशि श्मशाने चायुतं जपेत्। तद्रान्रौ कालिका देवी सम्यक्शत्यत्त्वमान्तुयात् ॥叉॥ तस्यैव मांसखएडक्घ काल्यै दद्यात्रयत्नतः। तदारम्य तु देवेशि शन्रुमुद्दिशय साधक: ॥६॥ श्रयुतं प्रजपेद्राच्रौ शवदाहस्थलेन तु । तद्रान्तौं तद्रिपुध्चैव स गच्छेद्यममनन्दिरम् ॥७\|
श्रादिनायकथित मार एकर्ममें ग्रतिसुगम गौडीमारएविद्या कहते हैंगौडदेशोंमें मदादेवी कालरात्री पसिद्ध है, उसके स्मरण माचसे लोकमें मारया कर्म हो जाता है। कालरान्रीमहामन्चके विना मारय चाहनेवाल्लोंको कष्ट भी होता है, समुर्र में बालुकाषृष्टिके समान च्वर्थ हो जाता है। ※ँ नमो भगवति-इल्यादि इस मग्रको ई्मशानमें दश हजार जपे, उसी रात्रोमें कालिका देवी सम्यक् प्रत्यन्त्त दर्शंन देती है, प्रयन्नये शवमांस कालीको देवे, उससे श्रारम्म कर साघक शन्नुका उद्दे शय लेकर रातको शवदाहस्थल पर हजार जप करे, उसी रात को उसका शनु यमलोक जाता है।

मारये केरेली विद्या चादिनायेन निर्मिता।
सघ्यः सिद्धिकरी चैव तां वन्द्ये तव सुव्रते ॥८॥
ॐँ हुँ २ ग्लौं २ वराहवदने घ्रमुकं पश्डुं गृहाए २ शोएितं पिब २ मांसं भत्ष्य २ कुालमृत्युर्वरुपिएिए मलयालभगवति हूँ फट्।

एतन्मन्न्रं मातृकाम्ये सृत्युयोगेन पार्वाति।
भ्रयुतं प्रजपेद्धीमान् मन्न्रसिद्विमवात्तुयात् ॥ह॥ चाएडालशल्यमादाय मन्त्रितं शतधा प्रिये।
भौमवारे शन्रुग्हे निन्तिपेन्चिशि बुद्धिमान् ॥९०॥
तच्छहन्नोरवशिक्यन्ति निर्वं शा (शों) जायते ध्रुवम् ।
मघूच्छिष्टेन करत्वा तु पुच्तर्लीं रिपुरूपिएीम् ॥??॥
तनुप्त्तीं ग्रहीत्वा तु निशि दन्च्निएपाएिना।
नमो मालिक्यमन्न्रस्य चायुतं जपमाचरेत् ॥१२॥

## शाबरचिन्तामराः:

तत्पुत्त्ली प्रेतकाष्टैर्निर्दहेन्मन्त्रपूर्वक्तम्।
पत्षाच्छन्रुर्टं तो भूल्वा स याति यममन्दिरम ॥३३॥
. ग्रादिनाथनिम्मित केरली मारएविद्या तर्काल सिद्धिकरी है-ふँ हुँ २इत्यादि मन्त्रको मृत्युयोग में मातृकाके श्रागे दश हजार जप करनेसे मन्त्रसिद्धि होती है। चाएडालका शल्य (विष्ठा) लेकर सौ वार मन्च्रितकर मझ्नलवारकी रात्रिमें शগ्रुके घर में फँक देनेसे उस शत्रुका निर्व"श श्रवश्य होता है। एक भी शेष नहीं रहता। मोमसे शन्र्र की पुत्तली बनाकर, उसको रानिमें दायें हायसे पकड़कर नमो माल्लिभ्य मन्श्रका दश हजार जप करे श्रौर शत्रुकी पुच्तलीको चिताकी लकड़ीसे मन्त्र पढकर जल्ला देवे तो १४ दिनके भीतर २ मर कर यमराजके दरवारमें जाता है ।

कर्नाटमारएी विद्या, श्रादिनाथेन निर्मिता।
सद्य: सिद्दिकरी चैव तां जपेत्र्रेतकानने ॥१४॥
※ँ हुँ ग्लौँ डाकिनी नररुधिरमांसप्रिये सध्यापूयभोजने श्रनेशकरनिर्नाशिति घ्यपरिमितजीवभन्तिएिए ह्रमुकं अन्त २ शोएितं पिब १ मांसं खादय२ एहि २ हुँ फट् ।

एतन्मन्न्रवरं देवि ध्रजपेत्र्रेतकानने।
प्रेतव्रोपरि स्थित्वा नग्नो दन्तिदिङ्सुखः ॥\{र\|
कष्टाष्टमीसमार भ्य यावत्कृष्याचतुर्दूरी।
अ्ययुतं प्रजपेन्मन्न्रं कालरान्रिकमेएा च ॥१६॥
सा डाकिनी प्रेतगएँं: सार्धमागत्य पार्वति।
किमस्ति कांन्तितं जूहि वैरिमारएकर्मशि ॥१७\|
तस्याहं मारयां चैव करिष्यामि न संशय:।
इत्युच्यते डाकिनी च सघो मारएकर्मए़ ॥?न॥
यस्य नाम्नां सह्रन्तु यो जपेदाद़रान्नःः।
मारएां्न भवेच्छ्हींघं नात्र कार्या विचाराए ॥?\&॥
कर्नाटमारएी शाबरी विद्या तरकाल सिद्धिकारिएी ग्रादिनाथकयित है, श्मशानमें उसका जप करे। ऊँ हुँ - त्यादि मन्त्रराजको श्रशानमें मुदेंके फफनके उपर बैठकर नङ्ना होकर दन्तिए मुलकर फष्टाष्टमीसे श्रारम्भ

कर कृष्णाचुर्दरशो पर्यन्त कालरात्रि कमसे दश हजार मन्र्र जप करे， डाकिनी पेतोंके साथ श्राकर क्या चाहते हो ？वरं वूहि ！वैरिमारणकर्ममें उसको मैं मारूँगी，इसमें संशय नहीं है। डाकिनी इस प्रकार कहती है，जिसका सहस्रनाम श्रादरसे जप（पाठ）करनेसे श्रवश्य मारएसिद्धि होती है। इसमें कोई सन्देह नहीं।

घ्यान्ध्ध मार एमन्ऩक्व वक्ष्येऽहं तव साद्रात्।
⿹勹चरादिनाथेन कथितमाधर्यंकरमीश्वरि ॥२०॥
 नरुधिरमांसपिये पहि२ श्रागन्ह्हर हूँ फट्र ख्वाहा।

एतन्मन्न्रं कुलेशानि भैरवाम्ये ठु साधक：।
घ्रयुतं प्रजपेन्मन्ज्ं सद्यः सिद्दिमवाप्नुयात् ॥२？॥
तदारम्य रिपुं स्मृत्वा，श्रयुतं जपमाचरेत्।
तच्छन्रवो विनश्यन्ति कुकेवरसद्टशोरपि वा ॥२२॥
श्रादिनायकयित श्राश्चर्यंकर श्रान्भ्रमार एमन्त्र कहते है—ँ हीं－－ इत्यादि इस मन्न्रको भैरवके श्रागे दश हजार जपे सचः सिद्दि प्रात्र होती है। तबसे शन्र्रका स्मरए कर दश हजार जपे तो उसके शत्र विनष्ट हो जाते हैं，कुवेरे समान भी क्यों न हों।

गुर्जरं चादिनाथोक्तं मारएां मन्न्रमुत्तंमम्।
वन्द्येहहं तव देवेशि गोपनं कुरु सर्वदा ॥२३॥
むँ ग्लौं २ महामाये अघोरशक्ते च्चघोरपराकमे अघोररूपिएा． एहि२ छे२ श्रमुकशन्रुं मारय२ शोएितं पिब२ ग्लौं ख्वाहा।

एतन्मन्न्नन्तु देवेशि ह्ययुतं चरिडकाप्रतः।
प्रजपेद्वलिप्वर्श्च शक्ति：घ्रत्यन्तमान्तुयात् ॥२४।।
तदून्यं प्रेतभूमौ तु धैर्यनुद्धिसमन्वितः ।
बल्लि दद्याक्कुक्कुटक्व मघ्यांसादिकं तथा ॥२ะ॥
इतिश्रीनित्यानन्द्कविविरचिते चिन्तामखौं शाबरे शिवा－


श्रादिनाथोक्त गुर्जरमार खमन्न्र गोपनीय हे— गँ ग्लौं－इत्यादि इस मन्न्रको चएडीके श्रागे श्रयुत（ 80000 ）जप कर बलि देनेसे शक्ति प्रत्यय्त्त होती है। घैर्य पूर्वक श्मशानमें प्रेतबस्तु मद्य मांसादि सहित कुक्कुट बलि देवे ।

## एकीदशः पटलः

पार्वस्युवाच－『नुमच्छाबरं मन्नं नित्यनाथोदितं तथा। वद़ मे करुएासिन्धो सर्वंकर्मफलप्रद्म् ॥१॥ ईश्वर उवाच－््याश्जनेयाख्यमन्न्र्व ह्यादिनाथोदितं तथा। सर्व प्रयोगसिद्विश्न तथाप्यत्यन्तपावनमू ॥२॥ ※ँ हीँ यँ ह्नाँ श्रीरामदू ताय रिपुपुरीदाहनाय अन्तक्रुन्तिविदा－ र्याय घ्मपरिमितबलपराक्रमाय रावरागिरिवज्नायुधाय ह्नाँ इचाहा। एतद्वायुकुमारास्यं मन्न्ं नैलोक्यपावनम्। गुरुवारे चाझ्ञंनेयं समारभ्ग सुबुद्विमान् ॥३॥ कांन्त्तितां कन्यकां वाथ युवाव्नोलयेव पार्वंति। आ्ञाझ्जनेयस्य पुरतो ह्ययुतं जपमाचरेत् ॥४॥ कज्जलक्व रवौं ग्राह्यं खाने पाने च पार्वति। दातव्यं निदिनं सम्यक् ख्वयमाकर्षएां भवेत् ॥乏॥ मन्त्रेयानेन देवेशि मन्ज्ञ习तं जलपानतः। सर्वरोगविनिर्सुक्को जीवेद्वर्षशतं तथा ॥६॥ ．．．．．．．．．．．．．．．．．निशाया：कझ्ञलं तथा। ताम्बूलं चन्दुनादिकम् $\|७\|$ दातःचं शतधामन्न्र वश्यमामरएान्तिकम् । इ्मशानभर्म चाद़ाय सहस्त्रं मन्त्रितं प्रिये \｜द\｜ खाने पाने प्रदातष्यं भोज्यवस्तुनि वा प्रिये । प्रातःकाले च जप्रण्यं चिः：सम्नदिनमादरात् $\|\&\|$ जिह्नास्तम्भनमाष्नोति चा चस्पतिसमोड\｛ि वा। विपचाएडालयो：शल्यं रवौ मध्यन्दुने प्रिये ॥१०\｜

गृहीत्वा पश्ववर्शान्नु कन्यकासून्रवेप्नात्। निखनेच्छ्रन्रुगेहे तु सदो विद्दे छएां भवेत् ॥??॥ पन्तमान्रेए देवेशि पशुपन्त्तमृतादयः। तत्तद्द्वैरिमयं शब्यं रवौ सझृंहं बुद्दिमान् ॥१२॥ कीलं कृत्वा शन्रुगेहे निखन्योचाटनं भवेत्। विश्रचाएडालयोः शल्यमर्के चार्कस्य मूलकम् ॥?३॥ चतुरिंधेन संनेष्ट्य नीलसून्रेया मन्न्रयेत्।
निखनेच्छच्रुगेहे तु शयनागारमध्यतः ॥?४॥ पन्तान्मर एामाल्लोति नान्र कार्या विचारएा। पार्वंतीपुत्र नित्यनाय महल्येत्रोन्पदिष्ट सर्वृ्पयोगसिद्ध चैलोक्यपावन※ँ हीँचँनटत्यादि इस श्राज्जनेय वायुकुमाराख्य हतुमच्छाजर मन्बको गुष्वारमें प्रारम्म कर साघक युवा ग्रमिलबित क.न्याको प्रात करता है। हनुमानुक्के श्रागे 10000 जन करके रविचारको फझ्ञल लेकर तथा. खान पानमें देनेसे ₹ दिनमें सम्यक् स्वयं श्राकर्षण होता है। इस मन्शसे ग्रभिमन्धित जलपान करने से सः रोगोसे सुक्त होकर सौ वर्ष
 वार मन्चित कर देनेसे मरखपर्यन्त वश्य होता है। इमशानका भर्म लेकर हजार वार मन्ध्रित कर बान पानमें देनेसे श्राजन्म वश्य होता है। २१ दिन तक श्रादरसे प्रातःकाल जपनेसे वाचस्पतिके समान शंच्रु का भी जिब्हाहतन्मन होता है। रविषार मध्यान्हमें विप्र तथा चाएडलका शल्य लेकर कुमारीके हाथ का 4 रख़का सूत लपेटकर शन्रु के घरमें गाह. देने से तरकाल विद्दे बय हो जाता हैं। शू दिनमें पशु. पत्की मृग श्रादि जन्तुवोमें भी विद्दे जए हो जाता है। चूहा विल्ली ग्रादि जन्मसिद्ध वैर वाले किन्हीं दो प्रायियोंका वीठ लेकर रविवारमें कील जनाकर शनुक्के घरमें गाडनेसे उचाटन होता है। रविवार में विप्र चाएडाल का शल्य तथा श्राकका मूल लेकर चार प्रारके नीले सूतसे लमेटकर श्रभिमन्त्रितकर शन्नुके शयन गहके मध्यमें गादे तो २४ दिनमें मर जाता है। इसमें कोई संशय नहीं।
CC. 0 - Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

## शाबरचिन्तामसि:

केरलं मन्त्रममलमाब्जनाख्यं सुपावनम्।
संव्रयोगक्कृन्म्न्र्ं सर्वंसिद्धिकरं नृसाम् ॥शथ
ॐ नमो भावते हन्नुमते जगत्राएानन्द्नाय उ्वलितविङ्गललोचनाय सर्वाकर्षसा-कारंायाइर्षयाकर्षय अ्यानय २ ध्युकं दर्शंय २ (कर्षय २) रामदूताय घ्यानय २ राम घाज्ञापयति ख्वाहा। एतन्मन्न्रं कुलेशानि श्राझ्जनेयं समर्चयेत्। धूपोपहारविधिना रात्रौ भानुदिनादितः ॥३६॥ द्वादशाहे भवेत् सिद्दिर्दिसहहत्रत (ज पादिना। तदन्ते बटुकानेव भोजयेद्वाएसंस्यया ॥१७॥ भ्यास्जनेयक्त गिरिजे रात्रौ ₹वप्ते समागत:। मन्न्रसिद्धिमवाव्नोति देवता च प्रसीदृति ॥ःन्त भानु बिम्घोपरि सम्यङ् नदी मध्ये ठु साधक:। जपेत्सहस्तसंख्याकं सिश्घल् वामपाएिना ॥६६॥ तन्मध्यस्था कुलेशानि नानामकरकच्छ़पाः। समायान्ति च निश्शेषं शिवस्य वचनं यथा ॥२०॥ वामपादररजो साहं र्वभियस्य कुलेश्वरि। तत्रातरम्बुना सम्यक्कास(श)येन्मन्त्रयोगतः ॥२१॥ घ्वादाय वामहर्तेन प्रजपेदयुतं तथा। ₹वयमागच्छूते शीघं शिवस्य वचनं यथा ॥२२॥
 इस मन्न्ये धूप उपहार इत्यादि विधिसे रविवारकी राजिसे हुनुमान्की पूजा करे २ हजार जपादि करे, तो २२ दिनमें सिद्धि होती है। तब 4 बडुकोको मोजन करावे, रातको ख्वर्नमें श्राकर हन्तुमान्पर्शन देते हैं, देवताकी प्रसन्नतासे मन्च्रसिद्धि होती है। साधक नदीके मध्यमें सूर्यंउस नदोमें रहनेवाले मंच्छ कच्छू श्रादि जल•जन्छु निश्शेष श्रा जाते हैं, शिवका वचन है, ग्रपने प्रियके वायें पाँवकी धूली वायें हायते लेकर दश हजार जप करे श्रौर उस धूलको पात:ซाल जलमें मिलाकर

मन्त्रितकर पिला देवे तो, पति वशीभूत होकर शीघ ख्वयं श्राता है, शिवका वचन है ।

कर्णटटाख्यं महामन्त्रमाझ्धनेयस्य पार्वति।
शाबरं मन्त्रमनचे वच्द्येऽहं तव सुघते ॥२३॥
ऊँ पँ ( यँ ) ह्नीं वायुपुच्राय एहि २ ध्ञागच्छ २ घ्यावेशय २ उ।मचन्द्र ध्राज्ञापयति स्वाहा ।

मन्ज्रतस्तु खाने पानेपूर्वच्पुश्चर्यमामन्त्रसिद्धि ।

- ताम्बूलेन कुलेशानि सीयामाकर्षयां भवेत्।

पुषपेयैव च राजानं चन्दन नैर्विश्रजं कुलम् ॥२४॥
शूद्राएां फलयोगेन ह्याकर्षएकरं भवेत्।
ध्राकष्रणब्च वैश्यानां सितया च गुडेन च ॥२叉॥
कएाटटक हनुमच्छाचर मन्त्र-ऊँ यँँइत्यादि मन्त्रसे छ्रभिमन्च्रित कर स्वान पान पूर्ववत् पुरश्चर्या कर देनेसे सिद्धि होती है। पानुसे स्त्रत्योंका श्राकर्ष्शा होता है। पुष्पसे राजाश्र्रोंका श्राकर्ष्ए होता है। चन्दनसे विप्रकुलका श्राकर्षण होता है। फलसे शूद्रोका श्राकर्षए होता है। गुड या चीनी मिश्रीसे वैश्योंका श्राकर्षए होता है ।

स्रान्ध्रं मन्न्रं प्रवद्यामि चाब्जनेयं सुपावनम्। सर्वरोंगप्रयोगेणु पाठात्सिद्धिकरं कलौ ॥२६॥
ॐँ नमो भगवते श्रसहायशूर सूर्यमएड्लकवलीकृताल कालीतक एहि २ श्रावेशय २ वीरराघव ध्याज्ञापयति स्वाहा। पूर्ववत्पुरश्चर्य, पूर्ववद्टड भोजनम । पूर्ववच प्रयोगन्तु कुर्यन्मान्त्रिककोविदः।
शतनारं मन्त्रितं (ताम्बु नु अस्मोद्यूलनमाचरेतू ॥२७ रये राजकुले चैव रवभावविजयो भवेतू।
श्रान्ध्र श।बर हनुम मन्त्र सब रोगोंके प्रयोगोमें पाठ मात्रसे सिद्बिदायक है-ऊँ नमो हत्यादि इस मन्त्रसे पूर्ववत् पुरश्चरए, पूर्वंत् बटुक भोजन कराकर पूर्ववत् प्रयोग करे सौ वार मत्त्रित भत्म लेपन करे जल़-


गुर्जरं शावरं मन्न्रमाझ्जनेयं सुपावनम प२く॥ वद मे करुणासिन्धो ह्यादिनाथोदितं पुरा।
ॐ नमो भगवते छअ्ख स्जनिपुत्राय उनायिनीनिवासिने उरुतरपराकमाय श्रीरामदूताय ल क्षपुरी दहनायग त्तरा न्तस संहारकारिये हुँ फट्। एवन्मन्न्रं कुलेशानि दुर्गाप्तायन्य्य (लय) बुद्धिमान्। जपेच्चन निशाकाले घ्ययुतं नियमेन च ॥२ह॥ मन्त्रसिद्यिमवाज्नोति द्वेवा च प्रसीदित। तदारम्य तु देवेश़ साध्यकर्मसमन्वितंम् ॥३०॥ भवेत्सहस्नमेकेकं दुर्गायाः पुरतो बुघः। कार्यसिद्दिमवाप्तोंत नान्र कार्या विचारसा ॥३?॥ एतन्मन्न्रेया देवेशि (हि) तिलपिष्न्नु बुद्धिमान्। पलमेकं अन्तयित्वा भरममार्जनतः प्रिये ॥३२॥ गतागतश्» वदति नान्नकार्या विचारखा। वारन्रयं मन्त्रितश्थ शर्करोदकपानत: ॥३३॥ खव्ने चैवाझ्ञनीसूत्रः सर्वं वदति निश्चितम्। एतच्छाबरमन्त्रक्व ह्याइ्जनेयाख्यमुत्तममू ॥३४॥ सर्वस्सिद्धिपदं लोके देढैरपपि सुदुलंभम् । इतिश्रीपार्वंतीपुत्रनित्यनाथसिद्बमत्येन्द्रविरचिते शाबरचिन्तामएावेकादशः पटलः समापः
श्रादिनाथ पार्वतीपुत्र मत्स्येन्द्रोपदिष्ट श्रांख्धनेय गुर्जर शाइरमन्त्र ॐँ नमो इत्यादि डुरांके मन्दियमें रातको नियमसे दश हजार जपे तो मन्न्रसिद्धि भी होती है, देवताकी प्रसन्नता भी होती है। तपसे साध्यकर्म सहित एक २ हजार दुरांके ग्र्यागे जप करे, कार्यसिदि होती है। इसमें कोई संशय नहों। इस मन्च्रसे तिलका पिष एक पल भच्वया कर भस्मका मार्जन करनेये गतागत (श्राने जानेवाला-ग्राय व्यय-मरने जीनेवालाहोने न होनेवाला इत्यादि ) कह देता है। ३ वार श्रभिमन्त्रित शक्करका जल पीनेसे स्वप्नमें हतुमान् सब कुष्धु कह देते हैं निब्⿰ित है। यह ग्रांजनेय शाबरमन्न सर्वंसिद्यिदायक तथा देवताश्रोंको मी दुर्लंम है।
C.C.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri


